★ जनवरी 2021
★ वर्ष 48 ★ अंक 1

₹15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

• वर्ष 48 • अंक 1 • जनवरी 2021 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध–सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
16. समाचार
32. क्या तुम्हें पता है ?
44. पढ़ो और हँसो
49. पहेलियां
50. कभी न भूलो?

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

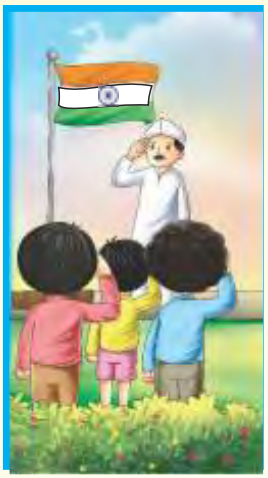

कहानियां

9. नये साल का वादा
: डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

18. दो चींटियों की बात
: राधा नाचीज़

19. बुराई में अच्छाई
: सुकृति

23. चोरी के अमरूद
: कालीचरण

26. सच्ची सुन्दरता
: मंगूसिंह

28. प्राप्ति से अधिक सुख ....
: सीताराम गुप्ता

31. दोगुना हुआ ईनाम
: कमल जैन

32. छोटी-छोटी बातें बड़ा ....
: प्रतीक्षा कुशवाहा

39. सजा की वापसी
: डॉ. विद्या श्रीवास्तव

40. क्रोध के घातक परिणाम
: आनन्द सिंह

46. दुश्मनी सांप और नेवले की
: कल्पनाथ सिंह

49. समझदारी
: चन्द्रभान

कविताएं

7. गणतंत्र
: डॉ. सेवा नन्दवाल

7. भारत देश हमारा
: डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

11. स्वच्छता
: जगतार 'चमन'

25. सर्दी की धूप
: डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा

25. सर्दी की ऋतु आई
: अनिल द्विवेदी 'तपन'

33. मत काटो इन वृक्षों को
: डॉ. रामलखन

41. आगे बढ़ते जाएं
: अभिनंदन

विशेष/लेख

8. खुशियों के रंग
: अर्चना जैन

16. वृक्ष कैसे सहते हैं ठंड
: विद्या प्रकाश

17. उनकी लेखनी से अंग्रेज ....
: ईलू रानी

21. अद्भुत समुद्री जीव : प्रासिका
: परशुराम शुक्ल

30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

38. आत्मनिर्भरता
: राधेलाल 'नवचक्र'

42. गरीबों का मेवा मूंगफली
: कैलाश जैन

सबसे पहले

मानवता के दीप जलाएं

समय सदा एक जैसा नहीं रहता। परिस्थितियां भी एक समान नहीं रहतीं। हालात बदलते रहते हैं। जैसा हम सोचते हैं हमेशा वैसा नहीं होता। हमारी इच्छा के अनुसार हर कार्य नहीं हो पाता फिर भी हम चाहते हैं कि जैसा मैं चाह रहा हूँ वैसा ही होना चाहिए। जब हालात हमारे वश में नहीं रहते तो हम अपने आपको असहाय महसूस करने लगते हैं। कुछ ऐसी चीजें होती हैं जिनके ऊपर हमारा कोई भी नियंत्रण नहीं है। जैसे बरसात, आँधी-तूफान, तेज़ गर्मी, सर्द हवाएं, भूकम्प, प्राकृतिक आपदाएं इत्यादि-इत्यादि।

कुछ ऐसी भी चीज़ें हैं जैसे पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती रहती है, वह भी बहुत तीव्र गति से; परन्तु इसकी गति हमें मालूम ही नहीं पड़ती और हम इसे स्थिर ही मान लेते हैं। इस पृथ्वी पर जो निरन्तर भागती रहती है, हम अनेकों भवन निर्माण करते हैं, अच्छे-अच्छे मकान, व्यापारिक भवन, बाज़ार, अस्पताल, वाणिज्य क्षेत्र, मॉल आदि बनाकर तथा खेती करके और हज़ारों अन्य उपक्रम करके जीवनयापन करते हैं।

जीवन को जीना एक बात है और जीवन कैसे जीना है वह बिल्कुल दूसरी बात। इस जीवन में हम रिश्ते बनाते हैं, मित्र बनाते हैं, वह भी इसलिए कि जीवन आसानी से जिया जा सके। इस प्रकार जीवन को आसानी से जीने और कुछ निहित स्वार्थ प्राप्ति के लिए हम हालात और परिस्थितियों से समझौता भी कर लेते हैं। यही स्वार्थ, यही चाह अनेकों बार हमसे वह कार्य करवा लेती है जिसको हम अनुचित कह सकते हैं। अनुचित हमेशा अनुचित ही रहता है। कार्य हमारे आसानी से तो हो जाते हैं परन्तु हमारे अन्दर की चेतना हमें कचोटती रहती है कि हमने वह मार्ग क्यों चुना?

यकीनन हम जानते हैं कि वर्ष 2020 में अनेकों चुनौतियां हम सबके जीवन में आईं। सभी ने उनका सामना किया, कई सावधानियों को अपनाया, अपनों के पास रहकर भी दूर रहने का अहसास किया। स्वच्छता को जीवन का अंग बनाया और कैसे किसी भी तरह की महामारी से सामना किया जा सकता है यह भी जाना।

प्यारे साथियों! अब वर्ष 2021 दस्तक दे रहा है। आइए सभी मिलकर इस वर्ष का अभिनन्दन करें। अपने मन में मेहनत का, संघर्ष का दीप जलाएं ताकि किसी भी प्रकार की कठिनाई या मुसीबत का सामना दृढ़ता से कर सकें। एक दीपक रोशनी तो दे सकता है लेकिन केवल एक दीपक से बहुत बड़े अन्धकार को मिटाया नहीं जा सकता। इसलिए हम सभी को एक आशा रूपी दीपक जलाना होगा और घोर निराशा के वातावरण को समाप्त करना होगा। इसमें सभी को सहयोग करना होगा। यह सहयोग होगा आत्मविश्वास का, दृढ़ निश्चय का, मेहनत और श्रम का, किसी भी परिस्थिति में अडिग रहने का, धैर्य का।

परिस्थितियां या हालात कैसे भी हों हमें परिस्थितियों को अपने पर हावी नहीं होने देना, अपना नियंत्रण नहीं खोना। हमें परिस्थितियों को अपने नियंत्रण में करना है और अपने अनुकूल बनाना है।

आओ हम यह संकल्प लें कि हम अपने मन के दीपक को हमेशा जलाकर रखेंगे ताकि कोई भी इस रोशनी से अपना दीप जला सके और मानवता के उत्थान का कारण बन सके।

नववर्ष में मन का दीप जलाएं,
सारे जग से तम को दूर भगाएं।

आपको और सभी को हँसती दुनिया परिवार की ओर से नववर्ष की प्रेमपूर्वक शुभकामनाएं।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 227

जिन्हां रब दा नाम ध्याया जग ते सच्चे शाह ने ओह।
दुनियां दी सब धन दौलत नूं कहन्दे अंत स्वाह ने ओह।
समझण इस दुनियां नूं फ़ानी आशक सिरफ बका दे ओह।
बे-परवाह ओह सच्चे बन्दे नग़मे गाण खुदा दे ओह।
पूरे गुर तों समझ के सच नूं कच नाल नाता तोड़न जो।
कहे अवतार ओहो ने गुरसिख रब नाल नाता जोड़न जो।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जिसके पास सांसारिक धन होता है, संसार में उसे साहूकार समझा जाता है लेकिन जिसके पास नाम धन है वास्तविकता में वही सच्चा साहूकार है। सांसारिक धन टिकाऊ नहीं है। यह आता और जाता रहता है। संसार की माया छाया के समान है जो अभी है और कुछ देर बाद नहीं है। जो अस्थिर है, चलायमान है उस पर भरोसा रखना समझदारी नहीं है। भक्ति से भरपूर सन्त-महात्मा इस परमात्मा का ही ध्यान करते हैं और वे नाम धन के सामने समस्त धन-दौलत को व्यर्थ समझते हैं।

बाबा अवतार सिंह जी कहते हैं कि जग की माया तुच्छ है, क्षणभंगुर और नष्ट होने वाली है। यह सदैव साथ देने वाली नहीं है। नाम धन से मालामाल भक्त नश्वर के संग प्रीत न लगाकर इस अविनाशी शाश्वत परमसत्ता के साथ प्यार करता है। इस दुनिया की सभी धन-सम्पत्तियों को एक निश्चित समय के बाद समाप्त हो जाना है। इसलिए इनके संग प्यार करने वाला, इन्हें बहुत ज्यादा महत्व देने वाला दुखी होता रहता है। भक्त केवल कायम-दायम, सदैव रहने वाले प्रभु से प्रेम करता है। जो फ़ानी है, मिट जाने वाला है उससे प्रेम करना वह निरर्थक समझता है।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि भक्त जग की माया को नाशवान समझते हुए केवल अजर-अमर परमात्मा से प्रेम करता है। वह इस प्रभु को ही सब कुछ समझकर तूही तूही निरंकार करता है और इसी का आधार लेता है। भक्त केवल परमात्मा के उपकारों का जिक्र करता है, वह व्यर्थ की चिन्ताओं से मुक्त और बेपरवाह होता है। उसे पता होता है कि उसकी परवाह करने वाला यह परमपिता परमात्मा सदैव उसके साथ है और यही उसकी रक्षा करने वाला है। ऐसा सच्चा पाक साफ इन्सान परमात्मा की प्रशंसा के गीत गाता है। गुरसिख पूरे सद्गुरु की शरण में आकर झूठ और सच अर्थात् माया और ब्रह्म का अन्तर अच्छी तरह समझ लेता है। झूठी माया से नाता तोड़कर गुरु का सेवक सत्य परमात्मा के साथ अपना नाता जोड़ लेता है। सहज और आनन्दमय जीवन जीने का यही सहज उपाय है।

संग्रहकर्ता : सोनी निरंकारी

अनमोल वचन

★ महापुरुषों की शिक्षाओं को हम जीवन में अपनाएं तो हमारे विचार सुन्दर बनेंगे तब हम सुख और प्रसन्नता महसूस करेंगे।

★ भक्त हर हाल में दातार के रंग में रहता है, उतार-चढ़ाव का असर ग्रहण नहीं करता बल्कि हर हाल में खुश रहता है।

★ प्रत्येक वस्तु मूल्यवान है लेकिन जीवन सर्वोपरि है। जीवन की मुक्ति सद्गुरु द्वारा ही सम्भव है। **– निरंकारी बाबा जी**

★ जिसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है, वह मनुष्य सदा पाप ही करता है। केवल पुनःपुनः किया हुआ पुण्य ही बुद्धि को बढ़ाता है।

– वेदव्यास

★ अपने अहंकार पर विजय पाना ही प्रभु की सेवा है। **– महात्मा गाँधी**

★ प्रेम करने वाला पड़ोसी दूर रहने वाले भाई से कहीं उत्तम है। **– चाणक्य**

★ हे परमेश्वर! हमारे मन को शुभ संकल्प वाला बनाओ। हमें सुखदायी बल और कर्म शक्ति प्रदान करो। **– ऋग्वेद**

★ विपत्ति में जिसकी बुद्धि कार्यरत रहती है, वह धीर है। **– सोमदेव**

★ निरन्तर अथक परिश्रम करने वाले भाग्य को भी परास्त कर देंगे। **– तिरुवल्लुर**

★ यदि आप चाहते हो कि अच्छे लोग तुमसे घृणा न करें तो शिष्टाचार के नियमों का सावधानी से पालन करो।

★ सदा सत्य बोलो झूठ बोलने वालों का लोग तिरस्कार करते हैं।

★ कोई बात बिना समझे मत बोलो जब तुम्हें किसी बात की सच्चाई का पूरा पता हो तभी उसे कहो।

★ अपनी बात के पक्के रहो जिसे जो वचन दो उसे पूरा करो जो काम जब करना हो उसे उसी समय करो उसमें देर मत करो।

★ प्रत्येक काम सावधानी से करो किसी काम को छोटा समझकर उसकी उपेक्षा मत करो।

★ पढ़ने में मन लगाओ विद्या प्राप्ति के लिए पूरा यत्न करो जो कुछ ज्ञानार्जन कर लोगे, वही जीवन में सफलता तथा सम्मान देगा ऐसा कोई काम मत करो जो अध्ययन में बाधा दे केवल ज्ञान की वृद्धि के लिए पूरी पढ़ाई करो।

★ ईश्वर सर्वशक्तिमान है उसकी दया उसकी अच्छाई तथा उसके न्याय का पार नहीं है। उसके अनुयायी नीतिमार्ग का परित्याग कर ही नहीं सकते।

– नीति सुक्तक

बाल कविता : डॉ. सेवा नन्दवाल

गणतंत्र

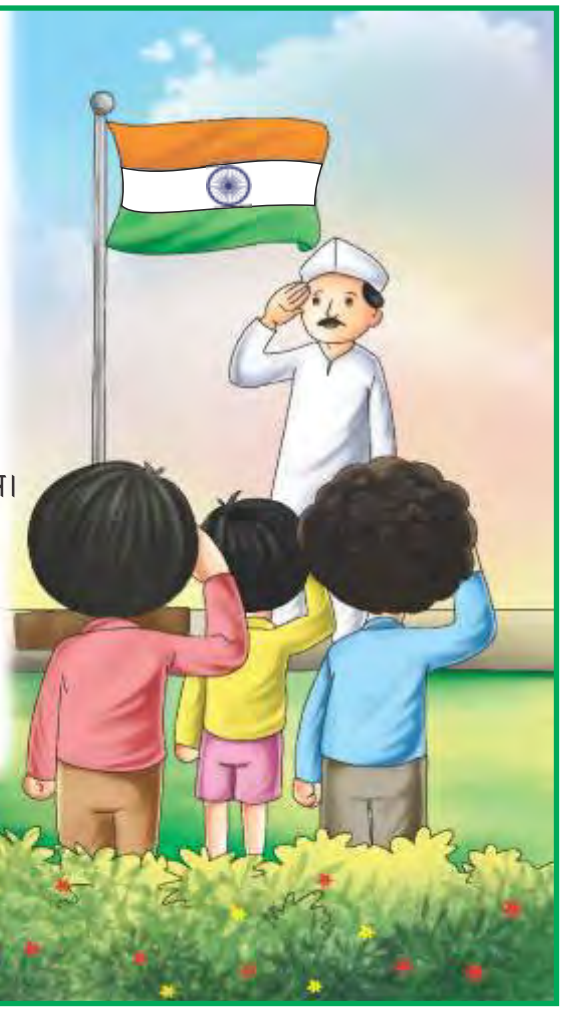

सफेद, हरे और केसरिया,
इन रंगों के सम्मिश्रण से,
बना राष्ट्रध्वज प्यारा।

इसकी आन बान शान,
और मान-सम्मान पर,
कुर्बान सर्वस्व हमारा।

तब ही कायम रख पाएं,
बेशकीमती और जरूरी,
अपनी आजादी और जनतंत्र।

सब जन तक उसका लाभ,
पहुँचाने हम कटिबद्ध हों,
इस दिवस गणतंत्र।

कविता : डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

भारत देश हमारा

तीन रंगों का बना तिरंगा,
निर्मल गंगा की धारा।
इस पर सारे मुग्ध भारतवंशी,
सबकी आँखों का तारा।।

प्राणों की बलि चढ़ा दी,
कितने वीर हमारे।
हँस-हँस के सब गोली खाये,
भारत माँ के दुलारे।।

धर्म जातियां भिन्न यहाँ की,
है सबका बड़ा दुलारा।
गुण गाते हैं इसके सारे,
प्राणों से भी है प्यारा।।

ऊँचे-ऊँचे पर्वत राजा,
नील गगन है न्यारा।
दुनिया में सबको है प्यारा,
भारत देश हमारा।।

नववर्ष पर
विशेष जानकारी : अर्चना जैन

खुशियों के रंग....

नववर्ष पूरे विश्व में हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन कहीं आतिशबाजी की जाती है, तो कहीं धार्मिक भजन गाये जाते हैं। आइए, कुछ ऐसी ही प्रथाओं से आपका भी परिचय कराते हैं।

नववर्ष के दिन ऑस्ट्रेलिया में कंगारू को देखना शुभ मानते हैं। कहते हैं कि इसे देखने से धन में वृद्धि होती है, जीवन में खुशहाली आती है, नये-नये दोस्त बनते हैं तथा व्यापार में हानि भी नहीं होती। इस दिन यहाँ कंगारू की नई तस्वीरें व मूर्तियां खरीदना भी शुभ समझा जाता है।

ब्राजील में इस दिन धार्मिक भजन गाने की प्रथा है। लोग किसी देवालय में एकत्रित होकर पहले दीप जलाते हैं फिर तरह-तरह की खुशबू से देवालय को महकाते हैं। मान्यता है कि नववर्ष में देव भजन करने से जीवन में शान्ति बनी रहती है, कभी प्राकृतिक आपदा परेशान नहीं करती।

अमेरिका में इस दिन जगह-जगह आतिशबाजी की जाती है। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक जी भरकर तरह-तरह की आतिशबाजी करते हैं। आसमान में बड़े-बड़े गुब्बारे उड़ाते हैं।

नववर्ष की भोर में जर्मनी में लोकनृत्य करने की परम्परा है। यहाँ के लोक जीवन में ऐसा विश्वास किया जाता है कि नाचने से शरीर की कसरत तो होती ही है इससे उम्र भी लम्बी होती है तथा गाना गाने से जीवन में कई तरह की खुशियां हासिल होती हैं। इस दिन यहाँ आसमान में 51 तोपों की सलामी भी दी जाती है। सलामी देने का कार्य सेना के जवान करते हैं।

दक्षिण अफ्रीका के आदिवासी इस दिन शिकार करना पाप समझते हैं। वे इस दिन जंगल में घायल पशु-पक्षियों का इलाज करते हैं तथा वृक्षारोपण भी करते हैं।

कांगो के आदिवासी इस दिन परिन्दों को पकड़कर आसमान में उड़ाते हैं। उनका विश्वास है, ऐसा करने से हर मौसम का चक्र सही रहता है तथा फसलें भी प्रचुर मात्रा में होती हैं।

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

नये साल का वादा

प्रिंस पांचवीं कक्षा का छात्र था। शाम को वह रमा मैडम के पास ट्यूशन पढ़ने के लिए जाता था। उसके पापा अपनी बाइक पर उसे ट्यूशन पर छोड़ने के लिए जाते थे। सड़क आवाजाई से भरी रहती थी। ट्यूशन वाली मैडम के घर तक पहुँचने के लिए उन्होंने लाल बत्ती वाला चौक पार करना पड़ता था। पापा अपनी बाइक इतनी तेजी से चलाते थे कि पीछे बैठा प्रिंस कई बार घबरा जाता। वह पापा को बाइक धीरे चलाने के लिए कहता लेकिन पापा पता नहीं किस मिट्टी से बने हुए थे। एकदम बोलते– ''अरे घबराते क्यों हो? मेरे होते फिक्र मत करो। पूरे ट्रेंड हैं तुम्हारे पापा। स्पाइडर मैन और शक्तिमान मेरे ही तो चेले हैं।''

एक दिन प्रिंस पापा के साथ ट्यूशन पढ़ने के लिए जा रहा था। वह चौक पर आए तो लाल बत्ती हो गई। पापा ने अपनी आदत अनुसार एक साइड से बाइक निकालने की कोशिश की तो प्रिंस ने पापा को टोक दिया। पापा एकदम तिलमिला गए और बोले– ''अरे तुम्हारी सांस क्यों फूल जाती है? चुपचाप बैठे रहा करो। कौन रूककर इंतजार करता रहे हरी बत्ती का?''

''पापा, बाकी लोग भी तो खड़े रहते हैं? वे भी इंतजार करते हैं।''– प्रिंस बोला।

पापा बोले– ''अरे लल्लू, बताओ यहाँ कौन पुलिसवाला हमें देख रहा है जो हमारा चालान काट देगा?''

''पापा, इसका मतलब यह हुआ कि यदि पुलिसवाला अंकल होगा तभी आप रूकोगे। हमारे स्कूल में ट्रैफिक इंस्पेक्टर आए थे और सभी छात्रों को बताया था कि हमें ट्रैफिक के नियमों का पालन करना चाहिए।''– प्रिंस ने कहा।

पापा एकदम बोले– ''अरे छोड़ो बेकार की बातें। मैंने तुमको छोड़कर वापिस दुकान पर भी तो आना होता हैं वरना दुकान बंद रहने के कारण मेरे ग्राहक दूसरी दुकान पर चले जाते हैं। यहाँ कोई पुलिसवाला नहीं खड़ा।''

प्रिंस को बार-बार पापा के यह शब्द शूल की भांति चुभते रहते थे, ''यहाँ कोई पुलिसवाला नहीं खड़ा।''

प्रिंस ने मन ही मन पापा की ऐसी आदत को छुड़वाने का निर्णय कर लिया। वह कोई योजना बनाने लगा।

एक दिन जब प्रिंस स्कूल से वापिस घर लौटा तो शाम को उसने पापा को एक नया ज्योमेट्री बॉक्स दिखाया। पापा ने उसका ज्योमेट्री बॉक्स देखा तो एकदम उसे देखते हुए बोले– ''अरे बड़ा सुन्दर है यह। कितने का खरीदकर लाये हो?''

प्रिंस ने गर्म लोहे पर चोट मारी। ''पापा खरीदकर थोड़ा लाया हूँ। अपने दोस्त का चुराकर लाया हूँ।''

''क्या? चुराकर लाये हो? मूर्ख तुमने यह क्या किया? चोरी करके तुमने कितना गलत काम किया है?'' पापा गुस्से में बोलने लगे।

प्रिंस ने कहा– ''पापा, जब मैंने एक लड़के के बैग से यह बॉक्स निकाला था, उस समय कमरे में कोई नहीं था जो मुझे देख रहा हो।''

यह बात सुनकर पापा का माथा ठनका। वह सोचने लगे– ''क्या यदि कोई देख न रहा हो तब कोई जुर्म करना ठीक है? नहीं, ऐसा ठीक नहीं किया प्रिंस ने। आगे जाकर इसकी आदतें और बिगड़ सकती हैं। प्रिंस के मन पर मेरी बुरी आदत का असर पड़ने लगा है क्योंकि मैं भी तो कानून की परवाह न करता हुआ अक्सर लाल बत्ती पार करके कहता हूँ कि यहाँ कोई पुलिसवाला नहीं देख रहा... ।''

पापा को गहरी सोच में पड़ा देखकर प्रिंस बोला– ''पापा, क्या सोच रहे हो?''

पापा ''कुछ नहीं, कुछ नहीं'' कहकर चुप हो गए। फिर बोले– ''जिस लड़के का तुम यह ज्योमेट्री बॉक्स उठाकर लाये हो कल को उसके बैग में डालकर आओ।''

नया साल आने में एक ही दिन शेष रह गया था। अगले दिन पापा प्रिंस को लेकर ट्यूशन पर छोड़ने के लिए जा रहे थे। चौक पर लाल बत्ती हो गई। पापा ने एकदम बाइक रोक ली।

''पापा, आपने आज... ।'' प्रिंस की बात अभी पूरी नहीं हुई थी कि पापा बोले– ''प्रिंस, मैं सचमुच गलत था। नियम की पालना करना हमारा कर्तव्य है। कल को नया साल है। कहते हैं कि नये साल पर अपनी किसी न किसी कमजोरी या गलत आदत का त्याग करना चाहिए। मैं कल से नहीं आज से ही नियमों का उलंघन करने की गलत आदत का त्याग कर रहा हूँ। नये साल के शुभ अवसर पर मेरा यह वादा रहा।''

यह सुनकर प्रिंस प्रसन्न हो गया।

रात को खाना खाने के बाद प्रिंस ने मम्मी को पापा के वादे की बात बताई। उसने यह भी बताया कि वह ज्योमेट्री बॉक्स चोरी करके नहीं बल्कि अपने दोस्त से एक दिन के लिए मांगकर लाया था ताकि पापा को... ।

पापा ने उसकी यह बात सुन ली और एकदम बोले– ''अच्छा, तुमने मुझे सबक सिखाने के लिए ऐसा किया था। बड़े शरारती निकले तुम... ।''

प्रिंस को प्यार करते हुए मम्मी बोली– ''शरारती नहीं समझदार है मेरा प्रिंस। जिसने आपको नियमों का अहसास तो करवाया।''

अगली सुबह घर-परिवार में पकवानों की महक आ रही थी। नये साल की बधाईयां जो मिल रही थीं।

कविता : जगतार 'चमन'

स्वच्छता

स्वच्छ भारत की करें तैयारी।
हम सब की ये जिम्मेदारी।

स्वच्छ-सबल हो देश हमारा।
आओ दे स्वच्छता का नारा।

घर-बाहर हो साफ-सफाई।
इसी में हम सबकी है भलाई।

मिलजुल गंदगी दूर करें।
कचरा डिब्बा मंजूर करें।

कचरा नहीं फैलाना है।
पोंचा और झाड़ू उठाना है।

आओ बच्चों सबको जगाएं।
स्वच्छता का महत्व समझाएं।

साफ-सुथरा हो अपना वतन।
स्वस्थ सुखी हो प्यारा चमन।

दादा जी

-लेखन एवं चित्रांकन
-अजय कालरा

2+7
कक्षा में भी उसका ध्यान पढ़ाई में नहीं लगता था। वह नींद में ही रहता था।
घर पर भी वह कोई काम समय पर नहीं करता था। वह टीवी पर गेम खेलता रहता था। अपना गृहकार्य करना भी उसे भारी लगता था।
चिराग, तुमने अपना गृहकार्य बहुत अच्छे से किया है।
मैंने तो गृहकार्य किया ही नहीं। अब मैं टीचर को क्या दिखाऊँगा?

5 -
शक्ति तुम्हारा गृहकार्य कहाँ है?
वो मैं, सर मैं अपनी कॉपी घर पर ही भूल गया हूँ।
शक्ति, आलसी तो तुम हो ही और अब झूठ भी बोलने लगे।
पर ... अध्यापक जी की डांट का भी शक्ति पर कोई असर नहीं था। वह सुबह देरी से उठता और शाम को भी कुछ न कुछ खेल में ही लग जाता।
शक्ति के पिता भी उसे समय से उठाने का प्रयास करते।
पर वह पिता की बात अनसुनी कर सोता रहता।

शिक्षा : आलस मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है।

वैज्ञानिकों ने खोजा 10 गुना अधिक काला पदार्थ

बोस्टन (भाषा)। एमआईटी के वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि उन्होंने एक ऐसे पदार्थ की खोज की है जो अब तक ज्ञात किसी भी काले पदार्थ के मुकाबले 10 गुना अधिक काला है। इस पदार्थ को उर्ध्वाधर संरेखित कार्बन नैनोट्यूब या सीएनटी से बनाया गया है। ये कार्बन के ऐसे सूक्ष्म तंतु हैं जो क्लोरीन की परत वाली एल्यूमीनियम फॉयल की सतह पर गूंथे रहते हैं।

शोध पत्रिका एसीएस-अप्लाइड मटेरियल्स एंड इंटरफेसेज में प्रकाशित लेख के मुताबिक फॉयल वहाँ आने वाले किसी भी रोशनी के 99.96 प्रतिशत हिस्से को अपनी ओर खींच लेती है

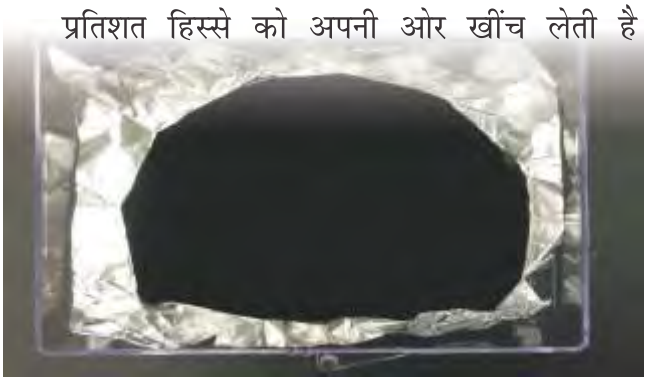

जिसके चलते ये अब तक ज्ञात सबसे काला पदार्थ बन जाता है।

अमेरिका स्थित मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्राध्यापक ब्रायन वार्डल ने बताया कि सीएनटी पदार्थ का व्यावहारिक इस्तेमाल हो सकता है। उदाहरण के लिए गैर जरूरी रोशनी को कम करने वाले ऑप्टिकल ब्लांइडर में या अंतरिक्ष दूरबीनों की मदद करने में।

वैज्ञानिकों का मानना है कि कार्बन नैनोट्यूब का जाल आने वाले प्रकाश के ज्यादातर हिस्से को बांधकर ऊष्मा में बदल सकता है और प्रकाश का बहुत थोड़ा-सा हिस्सा ही वापस प्रकाश के रूप में जाता है।

वार्डल ने कहा कि विभिन्न तरह के सीएनटी जाल को अत्यधिक कालेपन के लिए जाना जाता है लेकिन अभी भी इस बात को लेकर यांत्रिक समझ की कमी है कि आखिर ये पदार्थ सबसे काला क्यों है?

वृक्ष कैसे सहते हैं ठंड

उत्तरी गोलार्द्ध की हडकंपा देने वाली तेज ठंडक में पेड़-पौधों को पानी की कमी का सामना उसी प्रकार करना पड़ता है जिस प्रकार गर्म इलाकों के पेड़-पौधों को गर्मी के मौसम में। इसकी वजह यह है कि सर्दियों में बर्फ के कारण इन इलाकों की मिट्टी जमकर इतनी कड़ी हो जाया करती है कि पेड़-पौधे उसमें से तनिक भी पानी नहीं खींच पाते। इस स्थिति में उन्हें अपने पत्तों में मौजूद रस से ही अपना पोषण और गुजारा करना पड़ता है।

इसका सबसे अच्छा उदाहरण है चीड़ के सुईनुमा पत्ते। अगर इन पत्तों में मौजूद पानी जमकर बर्फ बन जाये तो पत्ते टूटकर झर जायेंगे। मगर पत्तों में रस अत्यल्प मात्रा में होता है यानी उनमें जमने के लिए अधिक पानी होता ही नहीं। यह पानी भांप बनकर नहीं उड़ता क्योंकि पत्तियों के छेद बहुत गहरे खांचों में स्थित होते हैं। **जानकारी : विद्या प्रकाश**

प्रेरक-प्रसंग : ईलू रानी

उनकी लेखनी से अंग्रेज घबराते थे

उन दिनों की बात है जब निर्भीक पत्रकार लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक बर्मा में थे। वहाँ हिन्दुस्तानियों के साथ अंग्रेज सरकार बात-बात पर रूखा व्यवहार करती थी। कई बार हिन्दुस्तानियों को बिना वजह ही जेल में ठूंस दिया करती।

लोकमान्य तिलक को यह बात उचित नहीं लगी कि निर्दोष हिन्दुस्तानियों को बेवजह जेल में ठूंस दिया जाए। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ एक ज्ञापन दिया और कहा– यदि हिन्दुस्तानियों को सात दिन के अन्दर रिहा न किया गया तो हम जंग की शुरुआत करेंगे जिसका अंजाम बहुत बुरा होगा।

सात दिनों के उपरान्त भी जब अंग्रेज सरकार ने निर्दोषों को आजाद न किया तो लोकमान्य तिलक ने एक बुलेटिन छापा जिसमें अंग्रेजों के कारनामों की सच्चाई थी।

यह पढ़कर अंग्रेज सरकार ने अपने अधिकारियों को आदेश दिया– तिलक को तुरन्त गिरफ्तार किया जाए।

अंग्रेज अधिकारियों ने तुरन्त तिलक को गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिया। जेल में उन्हें समाचार पढ़ने की अनुमति नहीं थी। इतना होने पर भी जेल में उनका जीवन नियमित था। वे प्रात: से कागज कलम लेकर बैठ जाया करते। अपने विचारों को कागजों पर लिखा करते। 24 घंटे के सफर में वे 15 घंटे तक लिखा करते।

जेल के सफर में ही उन्होंने पांच हजार से भी अधिक पृष्ठ लिखे थे।

इधर हिन्दुस्तान में जब हिन्दुस्तानियों ने अंग्रेज सरकार को तिलक व निर्दोष भारतीयों को रिहा न करने पर आन्दोलन किया तो अंग्रेज सरकार की आँख खुली। फिर तुरन्त तिलक व भारतीयों को रिहा करने का आदेश बर्मा भिजवाया।

जब तिलक को बर्मा जेल से रिहा किया जाने लगा तो जेल के अधिकारी ने उनसे 'गीता रहस्य' की पांडुलिपि मांग ली और कहा यह आपने जेल में लिखी है इसलिए यह बर्मा सरकार की सरकारी सम्पत्ति है।

यह सुनकर तिलक ने बड़े आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया– इसे मैं वापस लिख लूंगा क्योंकि स्वाध्याय और स्मरण शक्ति मेरी सम्पत्ति है। इसे तो भला आप नहीं ले सकते।

यह कहकर तिलक मुस्कुराते हुए अपने साथियों के साथ जेल से बाहर निकल आये। फिर हिन्दुस्तान लौटकर तिलक ने जेल में लिखे पृष्ठों को अपनी स्मरण शक्ति से पुन: लिखा और अपने अखबार 'केसरी' में भी उन्होंने क्रमश: प्रकाशित किया।

आजादी की जंग में तिलक ने अपनी पत्रकारिता से अंग्रेजों को कई मर्तबा घायल किया था क्योंकि उनकी लेखनी में सच्चाई और व्यंग्य का अद्भुत संगम था।

आज तिलक हमारे बीच नहीं, लेकिन उनकी अमिट यादें इतिहास दोहराता रहता है।

बाल कहानी : राधा नाचीज़

दो चींटियों की बात

एक बार गुरु और शिष्य कहीं बैठे हुए थे। तभी शिष्य ने गुरु से पूछा– ऐसा क्यों होता है कि जिन लोगों का व्यवहार कड़वा होता है, वे दूसरों के व्यवहार को भी कड़वा ही कहते हैं। गुरु ने कहा– ऐसा व्यक्ति की अपनी सोच के अनुसार होता है। जो व्यक्ति जिस तरह का होता है, उसे सभी वैसे ही दिखाई देते हैं। फिर उन्होंने शिष्य को एक कहानी सुनाई एक पर्वत पर दो चींटियां रहती थीं। एक चींटी के पास शक्कर की खान थी और दूसरी चींटी के पास नमक की खान थी। एक दिन शक्कर के खान वाली चींटी ने दूसरी चींटी को निमंत्रण दिया कि मेरे यहाँ आओ। कब तक नमक की खान में पड़ी रहोगी? कभी तो अपना मुँह मीठा कर जीवन को सफल करो।

दूसरी चींटी ने उसका निमंत्रण स्वीकार किया और उसके यहाँ गई। वह दिन भर शक्कर की खान में घूमती रही लेकिन कुछ खा नहीं सकी। शाम को उसने पहली चींटी से कहा– बहन, यदि तुम्हारे पास शक्कर की खान नहीं थी तो मुझे बेकार में बुलाया क्यों?

पहली चींटी समझ नहीं पाई कि आखिर उसे शक्कर की मिठास क्यों नहीं मिली।

दूसरी चींटी अपनी बात पूरी करते हुए बोली– वह तो अच्छा हुआ जो मैं पहले से ही नमक का टुकड़ा अपने साथ लेकर आई थी। वरना आज तो मैं कुछ खा नहीं पाती।

फिर गुरु ने कहा– हम भी अपने व्यवहार को हमेशा अपने साथ रखते हैं। हम अपनी नजर से ही दूसरों को देखते हैं जिससे हमें दूसरों का व्यवहार भी अपने जैसा ही नज़र आता है। जो सज्जन होते हैं वे दया का, प्रेम का व्यवहार करते हैं। इसी कारण उन्हें हर व्यक्ति दयालु नज़र आता है। जो दुर्जन होते हैं, वे अपने जैसा ही व्यवहार दूसरों में ढूंढते हैं। इसलिए उन्हें सभी अपने जैसे ही नज़र आते हैं। हमें वही प्राप्त होता है जो हम चाहते हैं। जैसे हमारे मनोभाव होंगे। जिस तरह का हम व्यवहार करेंगे, वैसा ही हमारा जीवन होगा।– गुरुजी ने अपनी बात पूरी की।

कहानी : सुकृति

बुराई में अच्छाई

एक बड़ी-सी नदी के किनारे कुछ पेड़ थे जिनकी टहनियां नदी की धारा के ऊपर तक भी फैली हुई थीं।

एक दिन एक चिड़ियों का परिवार अपने लिए घोंसले की तलाश में भटकते हुए उस नदी के किनारे पहुँच गया।

चिड़ियों ने एक अच्छा-सा पेड़ देखा और उससे पूछा– ''हम सब काफी समय से अपने लिए एक नया मजबूत घर बनाने के लिए वृक्ष तलाश रहे हैं। आपको देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। आपकी मजबूत शाखाओं पर हम एक अच्छा-सा घोंसला बनाना चाहते हैं ताकि बरसात शुरू होने से पहले हम खुद को सुरक्षित रख सकें। क्या आप हमें इसकी अनुमति देंगे?''

पेड़ ने उनकी बातों को सुनकर साफ इन्कार कर दिया और बोला– मैं तुम्हें इसकी अनुमति नहीं दे सकता... जाओ कहीं और अपनी तलाश पूरी करो।

चिड़ियों को पेड़ का इन्कार करना बहुत बुरा लगा। वे उसे भला-बुरा कहकर सामने ही एक दूसरे पेड़ के पास चली गयीं।

उस पेड़ से भी उन्होंने घोंसला बनाने की अनुमति मांगी।

दूसरा पेड़ आसानी से तैयार हो गया और उन्हें खुशी-खुशी वहाँ रहने की अनुमति दे दी।

चिड़ियों ने उस पेड़ की खूब प्रशंसा की और अपना घोंसला बनाकर वहाँ रहने लगीं। समय बीता... बरसात का मौसम शुरू हो गया। इस बार की बारिश भयानक थी। नदियों में बाढ़ आ गयी। नदी अपने तेज प्रवाह से मिट्टी काटते-काटते और चौड़ी हो गयी और एक दिन तो इतनी बारिश हुई कि नदी में बाढ़ आ गयी तमाम पेड़-पौधे अपनी जड़ों से उखड़कर नदी में बहने लगे और इन पेड़ों में वह पहला पेड़ भी शामिल था जिसने उन चिड़ियों को अपनी शाखा पर घोंसला बनाने की अनुमति नहीं दी थी।

उसे जड़ों सहित उखड़कर नदी में बहता देख चिड़ियों का परिवार खुश हो गया, मानो कुदरत ने पेड़ से उनका बदला ले लिया हो। चिड़ियों ने पेड़ की तरफ उपेक्षा भरी नजरों से देखा और कहा– ''एक समय जब हम तुम्हारे पास अपने लिए मदद मांगने आये थे तो तुमने

साफ इन्कार कर दिया था। अब देखो तुम्हारे इसी स्वभाव के कारण तुम्हारी यह दशा हो गई है।''

इस पर इस पेड़ ने मुस्कुराते हुए उन चिड़ियों से कहा– ''मैं जानता था कि मेरी उम्र हो चली है और इस बरसात के मौसम में मेरी कमजोर पड़ चुकी जडें टिक नहीं पाएंगी और मात्र यही कारण था कि मैंने तुम्हें इन्कार कर दिया था क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से तुम्हारे ऊपर विपत्ति आये।''

फिर भी तुम्हारा दिल दुखाने के लिए मुझे क्षमा करना और ऐसा कहते-कहते पेड़ पानी में बह गया।

चिड़ियां अब अपने व्यवहार पर पछताने के अलावा कुछ नही कर सकती थीं।

अक्सर हम दूसरों के रूखे व्यवहार या 'न' का बुरा मान जाते हैं लेकिन कई बार इसी तरह के व्यवहार में हमारा हित छुपा होता है। खासतौर पर जब बड़े-बुजुर्ग या माता-पिता बच्चों की कोई बात नहीं मानते तो बच्चे उन्हें अपना दुश्मन समझ बैठते हैं जबकि सच्चाई ये होती है कि वे हमेशा अपने बच्चों की भलाई के बारे में ही सोचते हैं।

इसलिए यदि आपको भी कहीं से कोई 'इन्कार' मिले तो उसका बुरा न माने क्या पता उन चिड़ियों की तरह एक 'न' आपके जीवन से भी विपत्तियों को दूर कर दे। हर बुराई में भी अच्छाई छिपी होती है'

''प्रभु, आपको वो नही देते जो आपको चाहिए बल्कि वो देते हैं जो आपके लिए श्रेष्ठ है।''

सुविचार

- ★ ज्ञानी मनुष्य दूसरों की भूलों से अपनी भूलें सुधारता है। **– पबलिस साइरस**
- ★ स्वार्थवश मनुष्य दोषों को नहीं देखता। **– चाणक्य**
- ★ त्रुटियां उसी से नहीं होगी जो कोई काम करे ही नहीं। **– लेनिन**
- ★ चरित्र इंसान का भाग्य विधाता है, जितना सुन्दर इंसान का चरित्र, चाल-चलन, आचरण होगा, उतना ही सुन्दर इंसान का भाग्य होगा।
- ★ अच्छा सोचो, अच्छे कर्म करो, अच्छे इंसान बनो। **–अज्ञात**

लेख : परशुराम शुक्ल

अद्भुत समुद्री जीव : प्रासिका

प्रासिका एक अद्भुत समुद्री जीव है। इसे अंग्रेजी में लान्सलेट कहते हैं। प्रासिका देखने में ईल मछली की तरह लगती है। यह ईल मछली की तरह अपने शरीर को घुमा-घुमाकर तैरती है किन्तु वास्तव में यह मछली नहीं है। प्रासिका एक समुद्री कृमि है। इसकी शारीरिक संरचना तथा अन्य बहुत सी विशेषताएं समुद्री कृमियों के समान होती हैं।

प्रासिका की लगभग 30 जातियां हैं तथा विश्व के सभी सागरों और महासागरों में यह पाई जाती हैं किन्तु किसी भी एक जाति की प्रासिका सभी सागरों में देखने को नहीं मिलती। उष्ण कटिबंधीय और समशीतोष्ण सागरों में इसकी संख्या अधिक है। प्रासिका उन सागरों में बहुत बड़ी संख्या में पाई जाती है जहाँ पानी का तापक्रम 30 डिग्री सेल्सियस से नीचे नहीं जाता। प्राय: सागर के किनारे के चट्टानी भागों में खारे पानी के छोटे-छोटे तालाब बन जाते हैं। इन तालाबों में भी प्रासिका मिलती है।

प्रासिका सागर तटों के उथले पानी में रेतीले अथवा कंकड़ पत्थर वाले तलों में रहना अधिक पसन्द करती है। यह प्राय: सागर के किनारे 5 मीटर से 30 मीटर तक की गहराई पर रेत में मांद बनाती है और इसी में रहती है। प्रासिका समशीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय सागरों में सामान्यतया तटों के पास रहती है और अधिकांश समय रेतीले अथवा कंकड़-पत्थरों वाले तल के भीतर व्यतीत करती है। इस समय इनका सिर सतह पर ऊपर की ओर लम्बवत् बाहर निकला रहता है। सागर तल पर मांद में आराम करती हुई प्रासिका को यदि परेशान किया जाये तो यह तेजी से मांद से निकलकर गहरे सागर में चली जाती है और कुछ समय बाद पुन: वापस आकर रेत में पहले की तरह गड़ जाती है।

प्रासिका अत्यन्त संवदेनशील जीव है। इसके शरीर के किसी भी भाग को यदि छुआ जाये तो यह बड़ी तेजी से प्रतिक्रिया करती है और सचेत हो जाती है। प्रासिका को यदि लम्बे समय तक अंधेरे में रखा जाये और फिर प्रकाश में लाया जाये तो यह कुछ असामान्य सी दिखाई देती है और इस प्रकार प्रतिक्रिया करती है। मानो, इस पर प्रकाश का सीधा प्रभाव पड़ रहा हो। प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया करने वाले समुद्री जीवों की तैरने की गति भी बड़ी तेज होती है। ये अपने शरीर से दस गुना अधिक लम्बी दूरी को मात्र एक सेकेंड में पार कर लेते हैं किन्तु ये इतनी तेज गति से अधिक समय तक नहीं तैर सकते। सामान्यतया ये इस गति से 50 सेकेंड से लेकर एक मिनट तक ही तैर सकते हैं।

प्रासिका की गणना विश्व के सर्वाधिक विलक्षण जीवों में की जाती है। प्रासिका देखने में रीढ़धारी लगती है किन्तु इसके रीढ़ की हड्डी, जबड़ों की हड्डियां अथवा शरीर के किसी भी भाग में कोई हड्डी नहीं होती। प्रासिका अरीढ़धारी होती है किन्तु इसकी पीठ की ओर रीढ़ की हड्डी की तरह एक

लोचदार छड़ होती है। इसी आधार पर इसे रीढ़धारी और अरीढ़धारी जीवों के मध्य का जीव कहा जाता है। वास्तव में यह रीढ़धारी जीव न होते हुए भी रीढ़धारी जीवों के बहुत निकट है। प्रासिका की शारीरिक संरचना को देखने में यह भी स्पष्ट हो जाता है कि विश्व में पाये जाने वाले सभी रीढ़धारी और अरीढ़धारी प्राणियों के पूर्वज एक ही थे।

प्रासिका की शारीरिक संरचना में कुछ गुण मछली के होते हैं और कुछ गुण कृमियों के। इसका शरीर ईल मछली की तरह लम्बा, बीच से मोटा और दोनों सिरों पर नुकीला होता है। इसके साथ ही इसकी पूँछ के पास इस प्रकार की मांसपेशियां होती हैं जैसी मछलियों में पाई जाती है। प्रासिका मछलियों के समान ही अपने शरीर को तेजी से लहराते हुए पूँछ की सहायता से तैरती है किन्तु इसमें मछलियों के समान जोड़े वाले मीनपंख नहीं होते।

प्रासिका की लम्बाई 3.7 सेंटीमीटर से लेकर 7.6 सेंटीमीटर तक होती है। विश्व की सबसे बड़ी प्रासिका कैलीफोर्निया (संयुक्त राज्य अमेरिका) में पाई जाती है। इसकी लम्बाई 7.6 सेंटीमीटर अथवा इससे भी कुछ अधिक हो सकती है। प्रासिका के आँख, कान, नाक, मस्तिष्क जैसे संवेनदनशील अंग तो नहीं होते किन्तु एक विकसित तंत्रिका तंत्र होता है। इसका तंत्रिका तंत्र पीठ के पास रीढ़ की हड्डी की तरह ही लोचदार छड़ के साथ एक डोरी के रूप में होता है। प्रासिका का हृदय नहीं होता किन्तु इसके शरीर में मछलियों के समान रक्त संचार व्यवस्था होती है। प्रासिका के खून में हीमोग्लोबिन नहीं होता। अतः यह रंगहीन दिखाई देता है। प्रासिका के शरीर का भी कोई रंग नहीं होता। यह अर्धपारदर्शी होता है। अतः थोड़ा-सा प्रयास करने पर इसके भीतर के सभी अंग बाहर से देखे जा सकते हैं।

प्रासिका का भोजन और भोजन करने का ढंग बड़ा रोचक होता है। इसका प्रमुख भोजन सागर के पानी में पाये जाने वाले समुद्री पौधे और मृत जीव-जन्तुओं के छोटे-छोटे कण हैं। इसके साथ ही यह प्लैकटन में पाये जाने वाले अति सूक्ष्म जीव भी खाती है। प्रासिका सागर के पानी में पाये जाने वाले कणों को छानकर भोजन प्राप्त करती है। इसके मुँह के पास छोटे-छोटे बहुत से बाल होते हैं जिन्हें लहराकर यह पानी में जलधाराएं उत्पन्न करती हैं। इससे भोजनयुक्त पानी इसके मुँह के भीतर आता है और ब्रैंकियल बास्केट नामक एक अंग तक पहुँचता है। ब्रैंकियल बास्केट देखने में अंडाकार थैली जैसी होती है। यह अंग इसके शरीर के आगे के आधे भाग में रहता है। यह अंग एक छन्नी की तरह कार्य करता है। ब्रैंकियल बास्केट के आधार पर नाली जैसा एक अंग होता है जिससे हमेशा एक चिपचिपा पदार्थ (म्यूकस) निकलता रहता है। इसी चिपचिपे पदार्थ में सागर के पानी के साथ आये हुए खाद्य कण फंस जाते हैं और यहाँ से इन खाद्य कणों को पेट तक पहुँचा दिया जाता है। ब्रैंकियल बास्केट का शेष पानी इसके शरीर के नीचे की सतह के मध्य भाग में बने एक छिद्र से बाहर निकल जाता है। प्रासिका इसी विधि से सांस भी लेती है। इसकी ब्रैंकियल बास्केट गलफड़ों का कार्य भी करती है तथा भोजन के साथ ही पानी में घुली हुई ऑक्सीजन भी ले लेती है तथा इस ऑक्सीजन को रक्त नलिकाओं द्वारा पूरे शरीर में पहुँचा देती है।

बालकथा : कालीचरण

चोरी के अमरूद

सोनू का स्कूल उसके गाँव से दो किलोमीटर दूर था। वह प्रतिदिन अपने साथियों के साथ पैदल ही स्कूल जाता था। आते-जाते हुए रास्ते में एक अमरूद का बाग पड़ता था। उस बाग के अमरूद सोनू को बहुत मीठे लगते थे। मोटे-मोटे और पके हुए अमरूद देखकर सोनू के मुँह में पानी आ जाता था किन्तु उस बाग के माली रामलाल से उसे बड़ा डर लगता था। रामलाल देखने में तो बड़ा दुबला-पतला था लेकिन बड़ी फुर्ती से वह बाग के चारों ओर लाठी लेकर चक्कर लगाता रहता था। कहीं कोई अमरूद चुरा न ले।

एक दिन सोनू के दोस्त राजू ने उससे कहा– चलो अमरूद तोड़ते हैं। दोपहर को माली सो जाता है। उसी समय बाग में घुस जाएंगे। किसी को पता भी नहीं चलेगा।

उस दिन स्कूल से लौटते समय वे दोनों बाग के पास रूक गये। उन्होंने देखा कि माली सो रहा है। दोनों तुरन्त बाग के भीतर घुस गये और मोटे-मोटे अमरूद तोड़कर बस्ते में भरने लगे। तभी पता नहीं माली रामलाल कैसे जाग गया? उसने दौड़कर राजू को पकड़ लिया। सोनू किसी तरह जान बचाकर भागने में सफल हो गया। रामलाल ने राजू की जमकर पिटाई की। उसकी इस पिटाई से सोनू बुरी तरह डर गया।

यह बात आई-गई हो गई। कुछ दिन बाद सोनू के मन में फिर लालच जगने लगा किन्तु रामलाल के रहते उसकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। बस वह एकटक पेड़ों पर लटकते हुए अमरूदों को घूरता चला जाता था। वह हमेशा अमरूदों के बारे में ही सोचता रहता था। एक दिन माली बीमार पड़ गया। उसे तेज बुखार हो गया था। वह दिन भर चारपाई पर पड़ा रहता था। भागने-दौड़ने में वह असमर्थ था। सोनू ने सोचा यही मौका है अमरूद तोड़ने का। कितने ही अमरूद तोड़ो उसे अब कोई पकड़

नहीं पायेगा। वह बाग में घुस गया। उसने बढ़िया-बढ़िया अमरूद तोड़कर बस्ते में भर लिए। जब बस्ता भी भर गया तो उसने अपनी पेंट की जेबों में भी अमरूद ठूस लिए।

इसके बाद वह इत्मीनान से घर की ओर लौटने लगा। वह बड़ा प्रसन्न था। वह कुछ ही दूर चला था कि सामने से गाँव के मुखिया को आते देख सिटपिटा गया। वह अमरूदों को छिपाने का प्रयास करने लगा। बस्ते में भरे अमरूद तो नहीं दिख रहे थे परन्तु पेंट की जेबों में रखे अमरूदों से जेबें उठकर मोटी हो गई थीं। उन्हें कैसे छिपाये, सोचकर परेशान हो गया। मुखिया ने पास आते ही उसे रोककर पूछा– किसके बेटे हो तुम, क्या नाम है तुम्हारा?

–मेरे पिताजी का नाम है श्री चन्दन सिंह।– सोनू कंपकपाते हुए बोला।

–अरे वे तो बहुत अच्छे आदमी हैं। तुम्हारे पिताजी को गाँव वाले बहुत मानते हैं और बड़ा मान-सम्मान देते हैं।– मुखिया बड़ी हैरत से बोले।

सोनू कुछ नहीं बोला– जैसे उसके शरीर की जान निकल गई हो।

–देखो बेटे!– मुखिया उसे समझाते हुए बोले– बेटा, कभी ऐसा काम मत करना जिससे तुम्हारे माँ-बाप को दुख पहुँचे। उन्हें पता चल गया तो बहुत बुरा लगेगा। तुम्हें गलत काम छोड़कर अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। पढ़ाई में अव्वल आकर अपने माँ-बाप और गाँव का नाम रोशन करो।

इतना कहकर मुखिया चले गये।

सोनू का गला सूखने लगा। उसे अपने किये पर पश्चाताप होने लगा। उसने निर्णय कर लिया कि वह जीवन में कभी चोरी नहीं करेगा। सिर्फ अपनी पढ़ाई पर ध्यान देगा और अच्छे नम्बरों से पास होकर दिखायेगा।

यह भी जानिये

देश और उनकी राजधानी

देश	राजधानी
फ्रांस	पेरिस
जार्जिया	त्बिलिसी
जर्मनी	बर्लिन
ईरान	तेहरान
इंडोनेशिया	जकार्ता
इज़राइल	यरूशलम
इटली	रोम
जापान	टोक्यो
अफगानिस्तान	काबुल

प्रस्तुति : प्रवीण सिसोदिया

बाल कविता : डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा

सर्दी की धूप

मुस्काई सर्दी की धूप,
इठलाई सर्दी की धूप।

सरसों के फूलों सी खिलकर,
पुलकाई सर्दी की धूप।

उचक-उचककर, उछल-उछलकर,
तुतलाई सर्दी की धूप।

कम्बल जैसा सम्बल देकर,
मन भाई सर्दी की धूप।

पर्वत से लेकर आंगन तक,
घिर आई सर्दी की धूप।

बाल कविता : अनिल द्विवेदी 'तपन'

सर्दी की ऋतु आई

ठिठुर रहे बच्चे-बूढ़े सब,
सर्दी की ऋतु आई।
तन पर बोझ बढ़ा कपड़ों का,
कैसी आफत आई।।

रुई समान घने कोहरे से,
टप-टप टपके बूंदें।
पेड़ों पर दुबके पक्षीगण,
पल-पल आंखें मूंदे।।

सूरज आंख मिचौली खेले,
व्यथित हुए जन सारे।
बड़ी-बड़ी रातें, दिन छोटे,
गायब चांद-सितारे।।

प्रेरक-प्रसंग : मंगूसिंह

सच्ची सुन्दरता

बात उन दिनों की है, जब सम्राट कृष्णदेव राय विजय नगर को सजा-संवार रहे थे। वह विजय नगर को ऐसा रूप देना चाहते थे कि लोग उसे देखकर स्वर्ग को भूल जायें। उन्होंने इस कार्य के लिए देश-विदेश से निपुण कारीगर, शिल्पी और माली बुलवाकर मनोरम बगीचे लगवाये, सुन्दर महल व मन्दिर बनवाये। सुन्दर-सुन्दर चौक व बड़ी-बड़ी सुन्दर सड़कें बनवायीं। मंत्री को आदेश था कि विजय नगर को सुन्दर से सुन्दर बनाने में कोई कसर न छोड़ी जाये। खजाने का मुँह खोल दिया था।

हुआ भी ऐसा ही विजय नगर के सौन्दर्य की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी। बाहर से सैलानियों के झुंड के झुंड वहाँ आने लगे। सम्राट कृष्णदेव राय विजय नगर की प्रशंसा सुनकर फूले न समाते थे। एक दिन सम्राट ने मंत्री की प्रशंसा करते हुए कहा– ''मंत्री जी की दिन-रात की मेहनत ने विजयनगर की सुन्दरता में चार चाँद लगा दिये हैं। यदि कहीं कोई कमी रह गयी हो तो आप लोग बताएं।''

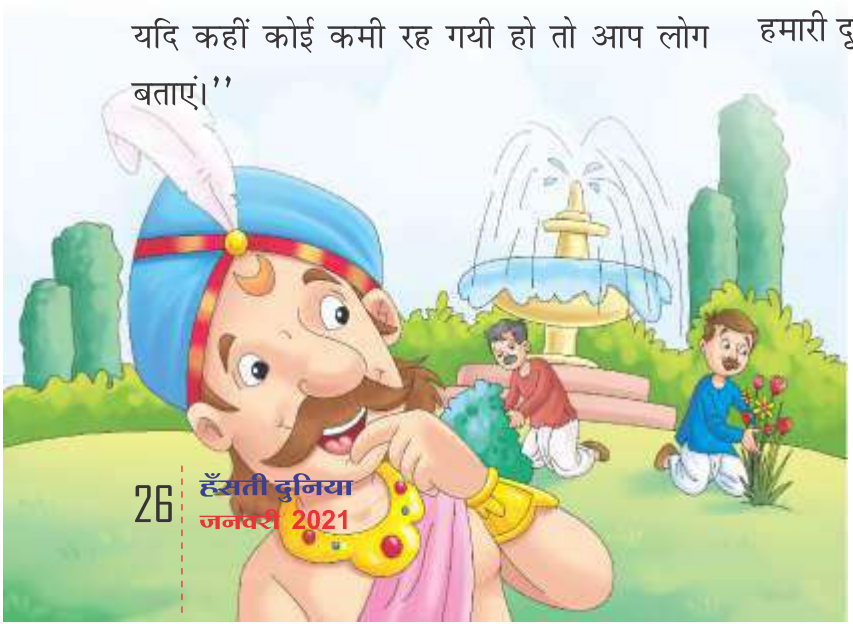

उत्तर में सभी ने एक स्वर में कहा– ''अन्नदाता, विजयनगर से सुन्दर दूसरा राज्य इस धरती पर नहीं। कहीं कोई कमी नहीं, कोई दोष नहीं।''

सारे दरबारी राजा और मंत्री की प्रशंसा में लग गये। मंत्री ने देखा, तेनालीराम मुँह पर हाथ रखे चुपचाप बैठा है। देखते ही उसने सम्राट कृष्णदेव राय से कहा– ''महाराज, तेनालीराम को शायद विजय नगर की प्रशंसा पसन्द नहीं आई। ऐसे चुपचाप बैठे हैं, जैसे सांप सूंघ गया हो, हमारी बातें सुनकर।''

''पसन्द आया महाराज, तेनालीराम ने उठते हुए बोला। मगर... ।''

सम्राट तमककर बोले– ''मगर क्या?''

तेनालीराम चुप रहा, तो सम्राट का क्रोध और भड़क गया। यदि तुमने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो तुम्हें दंड मिलेगा।

दरबारियों के मन बल्लियों उछलने लगे कि आज फंसे तेनालीराम। तभी तेनालीराम ने धीरे से कहा– ''मगर महाराज, एक कमी रह गयी है।''

''कमी... ?'' सम्राट कृष्णदेव ने मंत्री की ओर देखते तेनालीराम से पूछा– ''कौन-सी कमी? हमारी दृष्टि में तो कोई कमी नहीं रही।''

''इस कमी को आपकी कृपा-दृष्टि ही चाहिए अन्नदाता।''– तेनालीराम ने कहा।

''ठीक है।'' सम्राट बोले– ''हमें दिखाओ, वह कमी कहाँ है?'' कहते-कहते वह उठ खड़े हुए।

''मगर याद रखना यदि तुम कमी न दिखा सके तो प्राणदंड मिलेगा।''

तेनालीराम, राजा और दरबारियों को साथ लेकर कमी दिखाने चल पड़ा।

सभी चकित थे कि इतने सुन्दर विजय नगर में ऐसी कौन-सी कमी रह गयी है; जिसके कारण तेनालीराम प्राणदंड तक भोगने के लिए तैयार है।

अक्सर ऐसा होता था कि जब सम्राट कृष्णदेव राय नगर भ्रमण को जाते थे तो सड़कों पर प्रजा की भारी भीड़ उनका जय-जयकार करती थी। उन पर फूलों की वर्षा करती थी किन्तु इस बार न इतनी प्रजा थी न उसमें उतना उत्साह।

सम्राट को बड़ा अजीब-सा लगा। उन्होंने प्रश्न भरी दृष्टि से तेनालीराम की ओर देखा। तेनालीराम बोला– ''अन्नदाता, आप स्वयं प्रजा के बीच है। जो पूछना है उसी से पूछ लीजिए।''

सम्राट ने रथ रुकवाकर पूछताछ की। पता चला कि विजय नगर को सुन्दर बनाने के लिए मंत्री ने प्रजा पर तरह-तरह के भारी कर लगा दिये हैं। आम नागरिक को दो समय की रोटी जुटाना कठिन हो गया है। सम्राट कृष्णदेव राय को धक्का-सा लगा।

कुछ दूर कारीगरों के डेरे थे। वह वहाँ गये तो और दु:खी हो गये। हर ओर गन्दगी, न पानी का सही प्रबन्ध, न पानी निकासी का और न सफाई का।

सम्राट कृष्णदेव राय वहाँ अधिक समय तक न ठहर सके। दरबार में आकर घोषणा की– ''सारे बढ़े कर व नये कर वापिस ले लिये जायें। यदि प्रजा का जीवन ही सुन्दर न बना तो विजय नगर की सुन्दरता का क्या महत्व?''

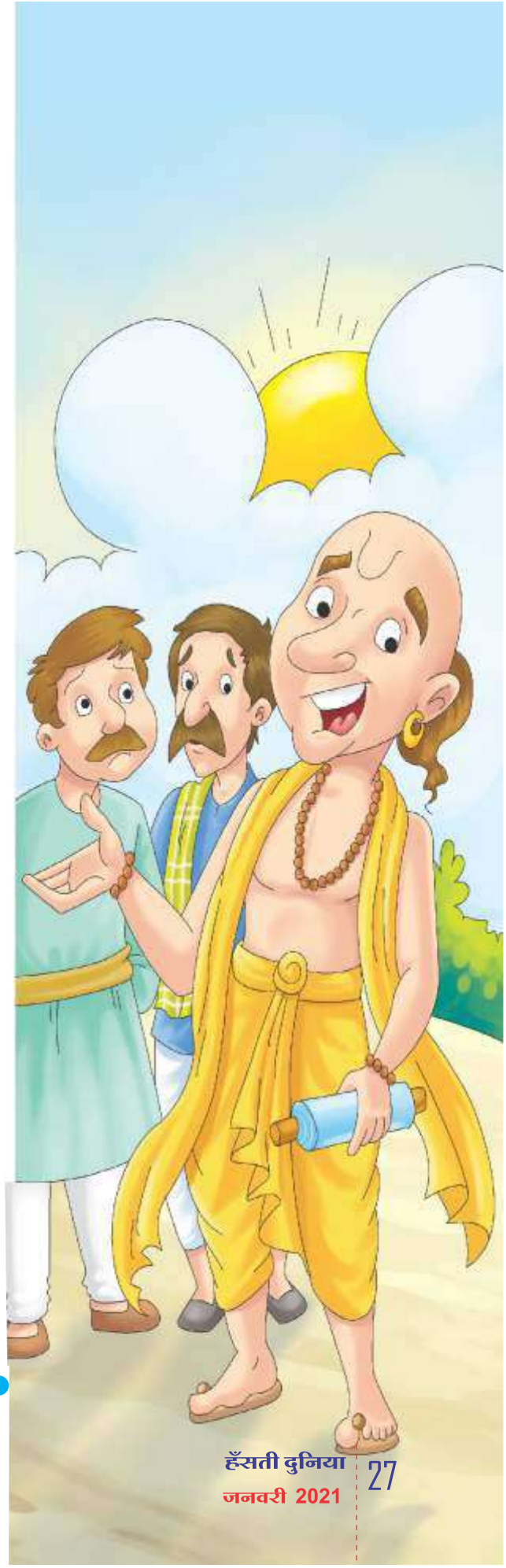

प्रेरक-प्रसंग : सीताराम गुप्ता

प्राप्ति से अधिक सुख मिलता है त्याग में

डायना नामक एक महिला ने बोस्टन से फीनिक्स जाने के लिए हवाई जहाज में आगे की सबसे मंहगी सीट बुक करवाई ताकि रात के सफर में उसे कोई परेशानी न हो। साथ ही मन ही मन वो ये कामना भी कर रही थी कि आगे की बाकी सीटें खाली रहें जिससे वो रातभर सारी सीटों पर पसरकर आराम से नींद ले सके। पहले भी एक हवाई यात्रा के दौरान उसकी ऐसी ही

इच्छा पूर्ण हो चुकी थी। उसे पूरी उम्मीद थी कि आज भी ऐसा ही होगा। उसकी तीव्र इच्छा के फलस्वरूप उस दिन भी उसके पास वाली सीटों पर कोई नहीं आया। वह बहुत प्रसन्नता का अनुभव कर रही थी क्योंकि उसकी उत्कृष्ट इच्छा अथवा आध्यात्मिक शक्ति के फलस्वरूप ही तो ये स्थिति उत्पन्न हुई थी।

तभी डायना ने सुना कि एक बुजुर्ग महिला यात्री एयर होस्टेस से पूछ रही थी कि क्या वो आगे की कतार में खाली सीट पर बैठ सकती है क्योंकि पीछे की सीट पर उसे बड़ी घुटन महसूस होती है और बैठने में दिक्कत होती है। जब एयर होस्टेस ने उससे कहा कि वो आगे की सीट पर अवश्य बैठ सकती है पर इसके लिए कुछ ज्यादा पैसे देने होंगे तो वो बुजुर्ग महिला ज्यादा पैसे देने में असमर्थता व्यक्त करते हुए दुखी मन से पीछे चली गई। यह देखकर सबसे आगे की सीट पर आराम से अकेली बैठी हुई डायना को उस बुजुर्ग महिला की स्थिति पर अफसोस होने लगा तथा उसकी मनचाही स्थिति की प्रसन्नता कम होने लगी। जब एयर होस्टेस उसके पास से गुजरी तो उसने एयर होस्टेस से उस बुजुर्ग महिला को अपने साथ वाली सीट देने व उसका अतिरिक्त भुगतान स्वयं करने को कहा।

साथ ही डायना ने एयर होस्टेस से ये भी निवेदन किया कि उस बुजुर्ग महिला को भुगतान के विषय में भी कुछ न बताए अपितु उसे ये कहे कि आप स्वयं हवाई कम्पनी की ओर से उसे ये ऑफर दे रही हैं।

ये सुनकर एयर होस्टेस मुस्कुराई और कहा कि वो ये सारी व्यवस्था कर देगी।

थोड़ी देर बाद ही बुजुर्ग महिला वहाँ आगे की सीट पर आ गई। आगे की उस आरामदायक सीट पर बैठने के बाद उस बुजुर्ग महिला के चेहरे पर परम संतुष्टि एवं प्रसन्नता का भाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था। उसकी प्रसन्नता को देखकर डायना को भी वर्णनातीत प्रसन्नता हो रही थी। उसे इतनी अधिक खुशी मिल रही थी जो उसकी उस निर्विघ्न नींद से कहीं बहुत अधिक थी जिसे पाने के लिए उसने मंहगा टिकट खरीदा था।

सफर की समाप्ति के करीब जब डायना ने भुगतान के लिए अपना क्रेडिट कार्ड उस एयर होस्टेस की तरफ बढ़ाया तो उसने क्रेडिट कार्ड लेने की बजाय उससे अत्यंत आदरपूर्वक व धीमे स्वर में कहा कि वो अपने पूरे स्टाफ की तरफ से उसका धन्यवाद करना चाहती है। एयर होस्टेस ने न सिर्फ बुजुर्ग महिला की सीट बदलने के पैसे नहीं लिए अपितु डायना के भोजन और पेय पदार्थों के पैसे भी नहीं लिए। घटनाएं हमारी इच्छानुसार घटित हो सकती हैं इसमें संदेह नहीं लेकिन हमारी प्रसन्नता उस समय चरम पर पहुँच जाती हैं जब हम दूसरों की प्रसन्नता के लिए उसे त्यागने के लिए तत्पर हो जाते हैं अथवा किसी की प्रसन्नता का कारण बन जाते हैं।

धन से

- धन से पुस्तक मिलती है किन्तु ज्ञान नहीं।
- धन से सुख मिलता है किन्तु आनन्द नहीं।
- धन से भोजन मिलता है किन्तु भूख नहीं।
- धन से एकांत मिलता है किन्तु शान्ति नहीं।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : चन्द्रमा पर किसी वस्तु का भार कम क्यों होता है?

उत्तर : पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है। इस कार्य के लिए पृथ्वी को कुछ बल लगाना पड़ता है। यही बल वस्तु का भार कहलाता है। जब कोई भी वस्तु चन्द्रमा पर होती है तो उसका भार चन्द्रमा के आकर्षण-बल पर निर्भर करता है। चन्द्रमा का आकर्षण-बल पृथ्वी के आकर्षण-बल का छठा भाग होता है। यही कारण है कि चन्द्रमा पर किसी वस्तु का भार कम अर्थात् पृथ्वी पर वस्तु के भार का 1/6 भाग हो जाता है।

प्रश्न : चलती बस से उतरते समय तुम आगे की ओर क्यों गिर पड़ते हो?

उत्तर : जब तुम बस में बैठकर यात्रा कर रहे होते हो तो तुम्हारा शरीर भी बस की गति के साथ-साथ गति अवस्था में रहता है। बस के रूकने से उतरते समय जब तुम अपने पांव नीचे जमीन पर रखते हो तो तुम्हारा निचला भाग विराम अवस्था में आ जाता है अर्थात् स्थिर हो जाता है। दूसरी ओर तुम्हारे शरीर का ऊपरी भाग गति अवस्था में ही बना रहता है। बस, इसी वजह से तुम आगे की ओर गिर पड़ते हो।

प्रश्न : वृक्ष की शाखाओं को हिलाने पर फल जमीन पर ही गिरते हैं, ऊपर क्यों नहीं जाते?

उत्तर : पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है। पृथ्वी के इस आकर्षण-बल का नाम गुरुत्वाकर्षण भी है। चन्द्रमा की तुलना में पृथ्वी का आकर्षण-बल 6 गुणा अधिक होता है। जब तुम वृक्ष की शाखाओं को हिलतो हो तो फल शाखाओं से टूटकर अलग हो जाते हैं। इन फलों को पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण के कारण अपनी ओर खींच लेती है। ये फल ऊपर की ओर इसलिए नहीं जाते क्योंकि चन्द्रमा का आकर्षण-बल पृथ्वी से कम है तथा वह इसे प्रभावित नहीं कर पाता।

लोककथा : कमल जैन

दोगुना हुआ ईनाम

चन्दनपुर के राजा चन्द्रवीर आम खाने के बड़े शौकीन थे। गर्मियों में वे तरह-तरह की किस्मों के आमों को बड़े चाव से खाया करते थे।

ऐसे ही एक बार गर्मियों का मौसम चल रहा था। एक किसान के बगीचे में कई मीठे-मीठे सुगंधित फल लगे थे। आम की बेहतरीन खुशबू से उसका बगीचा भी महकने लगा।

एक दिन किसान ने पेड़ से मीठे-मीठे आम तोड़े, टोकरे में भरे। उन्हें सिर पर रखकर राजा के दरबार में पहुँचा। आम के टोकरे को देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। मीठे-मीठे सुगंधित आमों की महक से उनके मुँह में पानी भर आया। ऐसे आम उन्होंने आज तक नहीं देखे थे, न खाये थे। आमों से मुग्ध होकर राजा ने किसान को सौ मोहरें ईनाम में दे दीं।

इतनी सारी मोहरें पाकर किसान बहुत खुश हुआ और वह वहीं खड़े-खड़े ही कई सपनों में रंग भरने लगा। जब वह पलटकर जाने लगा तो एक मोहर उसकी जेब से अचानक जमीन पर गिर पड़ी। उसने तुरन्त वह मोहर उठा ली। राजा का एक वजीर भी वहीं खड़ा था। जब उसने यह देखा तो उसने चुपके से राजा के कान में कहा– देखो, यह आदमी कितना लालची है। इतनी सारी मोहरें पाकर भी इसकी तसल्ली नहीं हुई। ऐसा लालची आदमी ईनाम के योग्य नहीं हो सकता।

यह विचित्र बात सुनते ही राजा गुस्से से तमतमा उठा; उन्होंने तुरन्त किसान को बुलाया और कहा– क्या सौ मोहरें कम थीं, जो तुमने जमीन पर गिरी एक मोहर भी उठा ली? तुझे इस करतूत की सजा मिलेगी।

किसान बहुत हाजिर-जवाब था। वह तुरन्त बोला– महाराज के ईनाम ने मुझे मालामाल कर दिया। मैंने वह मोहर केवल इसलिए उठाई कि उस मोहर पर आपका चित्र बना हुआ है, कहीं उस पर किसी का पैर न पड़ जाये और... ।

किसान के इस जवाब से राजा प्रसन्न हुआ और उन्होंने उसे सौ मोहरें और ईनाम में दे दीं।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

क्या तुम्हें पता है?

- गिरगिट अपनी जीभ से शिकार करने के लिए प्रसिद्ध है। उसकी जीभ फैलाने पर गिरगिट की अपनी लम्बाई पहले से दुगुनी हो जाती है।
- टिड्डा एक ऐसा कीट है जिसका रक्त सफेद होता है। टिड्डे की टांगें शरीर से अलग हो जाने पर भी चलती रह सकती हैं।
- जिराफ की गर्दन में मनुष्य की तरह ही सात हड्डियां होती हैं।
- शुतुरमुर्ग अपने भोजन के साथ कंकड़-पत्थर भी गटक जाता हैं ताकि पेट में भोजन की ढंग से पिसाई हो सके।
- मच्छर मनुष्य को काटने से पहले उस जगह पर एक प्रकार का द्रव छिड़कर उसे सुन्न कर देता है इसलिए काटने के बाद ही हमें पता चलता है पहले नहीं।
- स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी, फ्रांस द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका को दिया जाना वाला एक ऐसा उपहार है जिसके बाएं हाथ की पुस्तक पर अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा तिथि 4 जुलाई 1776 लिखी है।
- हाथी के दांत उसके जीवन में छः बार निकलते हैं।
- खटमल तीन वर्षों तक बिना भोजन किए जीवित रह सकता है।
- तितली ही ऐसा जीव है जिसमें स्वाद ग्रंथियां उसके पिछले पैरों में होती हैं।

प्रस्तुति : प्रतीक्षा कुशवाहा

छोटी-छोटी बातें
बड़ा फर्क डालती हैं

एक आदमी सुबह को समुद्र के किनारे रोज टहलने जाता था। उसने देखा कि लहरों के साथ सैंकड़ों स्टार मछलियां तट पर आ जाती हैं। जब लहरें वापस चली जाती तो मछलियां किनारे पर ही रह जाती और धूप से मर जाती। उसने देखा कि लहरें उसी समय लौटी थीं और स्टार मछलियां अभी जीवित थीं। वह आदमी कुछ कदम आगे बढ़ा उसने एक मछली उठाई और पानी में फेंक दी। वह ऐसा बार-बार करने लगा।

उस आदमी के ठीक पीछे एक और आदमी था जो यह नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या कर रहा है? वह उसके पास आया और पूछा– ''तुम क्या कर रहे हो? यहाँ तो सैंकड़ों स्टार मछलियां हैं। तुम कितनों को बचा सकोगे? तुम्हारे ऐसा करने से क्या फर्क पड़ेगा?''

उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। दो कदम आगे बढ़कर उसने एक और मछली को उठाकर पानी में फेंक दिया और बोला– ''इससे इस मछली को तो फर्क पड़ता है।''

हम कौन-सा फर्क डाल रहे हैं? बड़ा या छोटा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर सब लोग थोड़ा-थोड़ा फर्क लाएं तो बहुत बड़ा फर्क पड़ेगा।

बाल कविता : डॉ. रामलखन

मत काटो इन वृक्षों को

वृक्षों में भी जान वही है,
जो है हम सभी के अन्दर।
हरे भरे जो वृक्ष रहेंगे,
दुनिया होगी कितनी सुन्दर।
रखो सुरक्षित इन दरख्तों को,
मत काटो इन वृक्षों को।

लेकर कार्बन डाईऑक्साइड,
दूर प्रदूषण ये करते हैं।
ऑक्सीजन देकर हमको,
जिन्दा हमको ये रखते हैं।
है फायदा दोनों पक्षों को,
मत काटो इन वृक्षों को।

नि:स्वार्थ सेवा करते हैं,
हमारे लिए जीते, मरते हैं।
कितने फल पैदा करते पर,
पेट हमारा ही भरते हैं।
चुका नहीं सकते इनके कर्जों को,
मत काटो इन वृक्षों को।

मानसून भी इनसे ही बनता,
वरना जग सारा जाता जल।
करें आज रक्षा का वादा,
क्योंकि आता नहीं कभी कल।
न भूलें अपने लक्ष्य को,
मत काटो इन वृक्षों को।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

किट्टी, तुम्हें अपना होमवर्क भी तो करना था। अब टीचर जी से डांट खानी पड़ेगी।
मम्मी, अब तो मुझे देर हो रही है। मैं स्कूल जाकर जल्दी से कर लूंगी।
हम्म। मम्मी सही कह रही थी कि टीचर जी से डांट खानी पड़ेगी, अच्छा यही होगा कि मैं आज स्कूल ही नहीं जाती।
वाह, क्या मज़ेदार आइडिया आया मुझे! डांट भी नहीं खानी पड़ी और खेलने को भी मिल गया।

किट्टी, तुमने होमवर्क कर लिया था स्कूल में?
???
किट्टी, कल तुम स्कूल क्यों नहीं आई थी?
टीचर जी, कल मुझे बुखार था। इसलिए मैं स्कूल नहीं आ पाई।
अब तो तुम ठीक हो ना।
नहीं टीचर जी, अभी भी हल्का-सा बुखार है।
टीचर झटपट किट्टी की मम्मी को फोन करती है।
क्या? किट्टी को बुखार। कब? वो तो ...।
टीचर, किट्टी को अगर बुखार था तो आपको उसे आज भी स्कूल नहीं भेजना चाहिए था।

किट्टी घर आती है।
किट्टी, टीचर जी क्या कह रही थी। तुम कल स्कूल नहीं गई थी, तुम्हें बुखार था।
मम्मी .... मम्मी .... वो मैं होमवर्क नहीं कर पाई थी तो मैं डर गई थी।
किट्टी जोर-जोर से रोने लगती है।
सॉरी मम्मी! मैंने गलती की। मैं आपसे वायदा करती हूँ कि मैं अपना होमवर्क भी टाइम से करूंगी और कभी झूठ भी नहीं बोलूंगी।
अब चुप हो जाओ किट्टी और प्रण करो कि आगे से आलस नहीं करोगी और कभी झूठ भी नहीं बोलोगी।

प्रेरक-प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

आत्मनिर्भरता

वर्षों पुरानी घटना है। एक बार इंग्लैंड वासियों ने एक विशाल सभा का आयोजन किया। उसमें मुख्य अतिथि के रूप में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आमंत्रित थे। यथा समय वह सभा स्थल पर पहुँच भी गए। वहाँ उपस्थित भीड़ को खड़ी पाकर उनके अचरज की सीमा नहीं रही।

वस्तुस्थिति की जानकारी के लिए उन्होंने आयोजक को बुलवाया। फिर उनसे पूछा– ''लोग इस तरह क्यों खड़े हैं?''

''सफाई कर्मचारी नहीं आया है। अतएव अभी तक सभा स्थल की सफाई नहीं हो सकी है। इसी वजह से उपस्थित लोग खड़े हैं।'' आयोजक ने तत्काल जवाब दिया।

थोड़ी देर और प्रतीक्षा की गयी। मगर सफाई कर्मचारी फिर भी नहीं आया। अब ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने तनिक भी देर नहीं की। उन्होंने झट झाड़ू मंगवाया और उसे ले स्वयं सभा स्थल की सफाई करने में लग गये।

यह देख आयोजक ठगे से रह गए। उन्होंने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर को ऐसा करने से रोका। ''आप यह क्या कर रहे हैं? यह काम आपका नहीं है।''

''क्यों नहीं है?'' वह आगे बोले– ''हम अपना काम आप क्यों नहीं करें? दूसरों के भरोसे कब तक रहें?''

''आप हमारे मुख्य अतिथि हैं। सफाई का काम आपके लायक नहीं है।'' आयोजक महोदय ने तर्क दिया।

अपनी सफाई आप करना कोई बुरा काम नहीं है। यह तो गौरव की बात है। दरअसल हमें किसी भी काम के लिए पूर्णतया दूसरे पर निर्भर नहीं रहकर आत्मनिर्भर होना चाहिए। आत्मनिर्भरता बहुत बड़ी चीज है। वह जीवन की सफलता कुंजी है। उससे कोई काम बाधित नहीं होता और समय भी बचता है। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के तर्क ने आयोजक को निरुत्तर कर दिया।

यहीं नहीं; वहाँ उपस्थित जन समुदाय भी लज्जित हो उठा।

बोधकथा : डॉ. विद्या श्रीवास्तव

सजा की वापसी

राजा वीरसिंह को सुन्दर फूलों से प्यार था। उसने अपने महल के आस-पास ही एक बड़ा सुन्दर उपवन बनवा रखा था जिसमें तरह-तरह की खुशबू वाले फूलों के पौधे लगे हुए थे।

एक दिन उस उपवन में काम करने वाले माली से एक गमला टूट गया। राजा वीरसिंह को जैसे ही मालूम हुआ। उन्होंने उस माली को फांसी की सजा सुना दी। मंत्री ने भी राजा को समझाया पर राजा वीरसिंह पर कोई असर नहीं हुआ। राजा कुछ सनकी था। उसने घोषणा करवा दी जो व्यक्ति टूटे गमले को ज्यों का त्यों जोड़ देगा उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

काफी लोगों ने प्रयास किया पर सब असफल रहे।

अन्त में एक महात्मा राजा वीरसिंह के दरबार में आए। वे बोले– ''राजन्, मैं आपके टूटे गमले को जोड़ने का वचन देता हूँ। पर इतना जान लीजिए जब यह मनुष्य देह अमर नहीं तो आपका गमला कैसे शाश्वत रह सकेगा।'' राजा की अनुमति से महात्मा, राजा के साथ उस सुन्दर उपवन पहुँचे। वहाँ पर महात्मा ने एक पत्थर से अन्य साबुत गमलों को भी तोड़ डाला। यह देखकर राजा वीरसिंह को महात्मा पर बहुत गुस्सा आया पर वे चुप रहे। राजा ने सोचा– महात्मा के पास कोई चमत्कार होगा जो शायद टूटे हुए गमले जोड़ दे।

आखिर राजा चुप न रह सका। वह बोल पड़ा– ''महात्मा जी, आपने यह क्या किया?''

महात्मा बोले– ''मैंने गमले तोड़कर कई व्यक्तियों की जान बचाई है। आपने एक गमला टूटने पर एक व्यक्ति को फांसी की सजा सुनाई है।

महात्मा जी की बात सुनकर राजा को समझ आ गई। उसने माली को दी गई फांसी की सजा वापिस ले ली।

बाल कहानी : आनन्द सिंह

क्रोध के घातक परिणाम

एक साधु भिक्षा में प्राप्त अन्न से अपनी उदरपूर्ति करते हुए सदा प्रभु-भजन में लीन रहते। एक दिन वे गाँव के धनी सेठ के यहाँ भिक्षा मांगने पहुँचे। सेठ ने साधु को भिक्षा दी और बोला– महात्मा जी मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ।

साधु ने कहा– पूछो।

सेठ ने कहा– लोग लड़ाई-झगड़ा क्यों करते हैं?

साधु कुछ देर चुप रहे और फिर बोले– मैं यहाँ भिक्षा लेने आया हूँ। तुम्हारे मूर्खतापूर्ण प्रश्नों के उत्तर देने नहीं। इतना सुनते ही धनी सेठ क्रोधित हो गया। स्वंय पर से नियंत्रण खो बैठा और क्रोध में साधु को खूब खरी-खोटी सुनाता रहा। साधु चुपचाप सुनते रहे। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

धनी सेठ का क्रोध शांत होने पर साधु ने उसे समझाते हुए कहा– भाई, जैसे ही मैंने तुम्हें तुम्हारी पसंद के विपरीत बातें बोलीं, तुम्हें क्रोध आ गया और मुझ पर चिल्लाने लगे। यदि मैं भी क्रोधित हो जाता तो हमारे बीच बड़ा विवाद संभव था। यही लड़ाई-झगड़ों का प्रमुख कारण है।

क्रोध ही सभी विवादों का मूल कारण है और शांति हर विवाद की समाप्ति का उपाय है। यदि हम जीवन में सुख-शांति चाहते हैं तो क्रोध को नियंत्रित करना होगा इसके लिए प्रतिदिन प्रभु-परमात्मा का स्मरण करें।

अब जो बात हम करने जा रहे हैं वह है तो कठिन परन्तु असम्भव नहीं। हमें घर-परिवार, कार्यस्थल पर सदा शांत रहना चाहिए। यदि दूसरा कोई क्रोध करे भी तो हम उत्तर शांति से ही दें। जैसे ही हमने शांति का दामन छोड़ा और क्रोध किया तो छोटी-सी बात भी बड़ी हानिकारक बन जाया करती है।

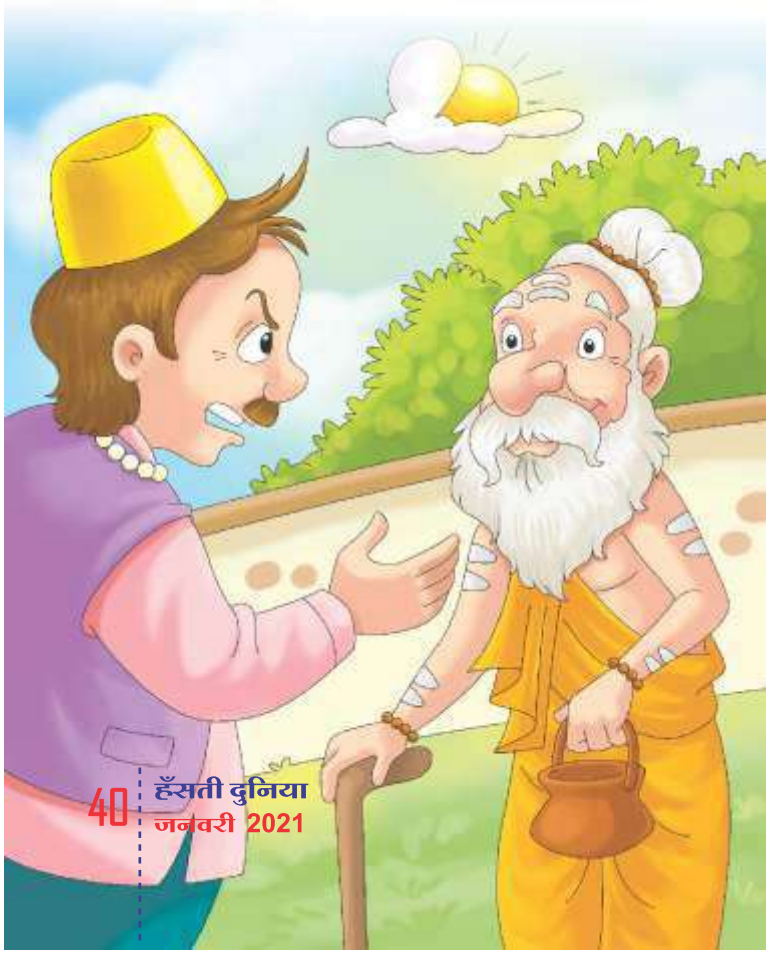

कविता : अभिनंदन

आगे बढ़ते जाएं

तीन रंग का लिए तिरंगा,
आगे बढ़ते जाएं।

अंग्रेजों को मार भगाकर,
यह आजादी पायी।
सत्य अहिंसा को लेकर की,
बापू ने अगुवाई।
राष्ट्रपिता सा अपने हम भी,
रघुपति राघव गाएं।
आगे बढ़ते जाएं।

कदम-कदम पर तुम्हें मिलेंगे,
मेले और झमेले।
तुम्हें जूझना होगा इनसे,
बिल्कुल निपट अकेले।
आएं कितनी भी बाधाएं,
कभी नहीं घबराएं।
आगे बढ़ते जाएं।

आओ हम सब भारतवासी,
अपने को पहचानें।
भारत का हो मस्तक ऊँचा,
अपने मन में ठानें।
देश धर्म की रक्षा के हित,
अपने शीश कटाएं।

तीन रंग का लिए तिरंगा,
आगे बढ़ते जाएं।

लेख : कैलाश जैन

गरीबों का मेवा मूंगफली

'गरीबों का मेवा' अथवा 'देशी काजू' कही जाने वाली मूंगफली वस्तुत: मूल रूप से भारतीय उपज नहीं है। मूंगफली को भारत की धरती पर लाने का श्रेय पुर्तगाली व्यापारियों को दिया जाता है जो सौलहवीं सदी में अपने नीग्रो गुलामों के आहार के लिए मूंगफली को यहाँ लाए। भारत में मूंगफली की सबसे पहले खेती मद्रास में की गई। इसके बाद यह महाराष्ट्र पहुँची। फिर धीरे-धीरे सारे देश में फैल गई। ऐसा माना जाता है कि मूंगफली मूलत: अफ्रीका की उपज है जो पश्चिमी यूरोप के देशों में होती हुई बाकी विश्व तक पहुँची। आज हमारा देश विश्व का एक प्रमुख मूंगफली उत्पादक राष्ट्र है जो मूल उत्पादन का चालीस प्रतिशत से भी अधिक भाग पैदा करता है। मूंगफली उत्पादक देशों में चीन, अमेरिका, जापान, अर्जेंटीना, अलजीरिया, पाकिस्तान आदि प्रमुख हैं। भारत में लगभग सवा दो करोड़ एकड़ भूमि पर मूंगफली उगाई जाती है और मूंगफली का वार्षिक उत्पादन 75 लाख टन से अधिक है।

मूंगफली का पौधा 'लेग्यूमिनोसी' कुल से सम्बन्ध रखता है तथा इसका लेटिन नाम 'ऐरेकिस हायपोजिया' है। मूंगफली को संस्कृत में भूशिम्बिका, गुजराती में मांडवी, मराठी में मुंगाची, फारसी में मूलियन, तमिल में बेरकदलाई और अंग्रेजी में ग्राउण्डनट कहा जाता है। मूंगफली की एक दर्जन से भी अधिक विभिन्न प्रजातियां पाई जाती हैं। यह खरीफ की फसल है। वर्षाकाल के प्रारम्भ में इसकी बुवाई शुरू हो जाती है। इसके लिए बालुई मिट्टी और काली मिट्टी उपयुक्त होती है। मूंगफली की फसल को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती।

पौष्टिकता की दृष्टि से मूंगफली एक उत्तम खाद्य पदार्थ है। प्रति सौ ग्राम मूंगफली से साढ़े पाँच सौ कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। इसके तेल के गुण-धर्म अत्यधिक कीमती जैतून के तेल से मिलते-जुलते हैं। मूंगफली में प्रचुर मात्रा में प्रोटीन, चिकनाई और प्राकृतिक शर्करा पाई जाती है। मूंगफली खाने से दूध, बादाम और घी की पूर्ति हो जाती है। चूंकि इसकी तासीर गर्म है। अत: इसे सर्दी के मौसम में खाना विशेष रूप से लाभदायक है। तेल का अंश होने के कारण इसमें वायु सम्बन्धी रोगों को नष्ट करने की क्षमता होती है। मूंगफली में मौजूद प्रोटीन सोयाबीन, बादाम, अखरोट, मक्खन, दूध और पनीर से प्राप्त प्रोटीन्स की अपेक्षा उच्च श्रेणी के होते हैं। प्रोटीन से भरपूर होने के कारण मूंगफली एक पोषक आहार है और शरीर में प्रोटीन की पूर्ति करने में पूर्णत: सक्षम है।

स्वाद में मूंगफली मृदु, सुपाच्य तथा तीक्ष्ण होती है। इसका प्रभाव गर्म होता है। यह बलवर्द्धक, वायुसारक, पीड़ाहर, अग्निदीपक होती है। यह मुख्य रूप से रक्त संचार संस्थान को प्रभावित करती है।

आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार मूंगफली के तेल को कफ और वातवर्द्धक माना गया है। त्वचा सम्बन्धी रोगों में इसके तेल को हल्का गर्म कर धीरे-धीरे मालिश करने से लाभ होता है। जोड़ों के दर्द में भी यह मालिश उपयोगी है। अत्यधिक पौष्टिक होने के कारण बच्चों को कम

मात्रा में नियमित रूप से मूंगफली खिलाकर आप उन्हें कुपोषण से बचा सकते हैं। स्तनपान कराने वाली माताओं को भी नई कच्ची मूंगफली खिलाने से दूध की मात्रा में वृद्धि होती है तथा शिशु को प्रोटीन की आपूर्ति हो जाती है।

शीतकाल में शरीर के रूखेपपन को समाप्त करने के लिए मूंगफली के तेल में दूध और गुलाबजल मिलाकर अच्छी तरह मालिश करें और आधा घंटे बाद गर्म पानी से नहा लें। इससे आपकी त्वचा नई चमक व कांति से भर उठेगी।

मूंगफली का तेल निकालने के बाद बचे हुए अवशिष्ट पदार्थ अर्थात् खली को उत्तम पशु आहार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। यह खली अन्य तिलहनों की खली के मुकाबले अधिक पौष्टिक मानी जाती है क्योंकि इसमें नाईट्रोजन की मात्रा अधिक होती है।

मूंगफली का आटा अत्यन्त पौष्टिक, सुपाच्य और पोषक तत्वों से भरपूर माना गया है। मूंगफली के आटे में प्रोटीन की मात्रा दस प्रतिशत मानी जाती है।

प्रोटीन बनाने वाले निम्न तत्व जिन्हें अमीनो अम्ल कहा जाता है, मूंगफली में निम्नानुसार पाए जाते हैं :–

आर्थानिन 13.6 प्रतिशत, लाइसिन 4.4 प्रतिशत, हिस्टीडीन 2.2 प्रतिशत, ट्रिप्टोफेन 0.7 प्रतिशत, टायरोसिन 4.5 प्रतिशत और सिस्टीन 1.2 प्रतिशत।

बैंगलोर की केन्द्रीय खाद्य अनुसंधानशाला में मूंगफली के अनेक आहार और प्रोटीन युक्त दूध, दही, मक्खन आदि बड़े पैमाने पर बनाने के प्रयास जारी हैं। मूंगफली का तेल निकालने के बाद उसकी खली पशुओं के लिए पौष्टिक और पूरक आहार का काम देती है, यह खली चूंकि प्रोटीन और वसा युक्त होती है, अतएव जानवरों की सेहत के लिए हितकर भी है।

मूंगफली के छिलके भी बेकार नहीं होते। इन छिलकों का प्रयोग गत्ता, हार्ड–बोर्ड आदि के निर्माण में किया जाता है। कई बार इन छिलकों को घरों में ईंधन के रूप में भी काम लिया जाता है। मूंगफली की जड़ों से झाड़ू व तूरे बनाए जाते हैं। इनको जलाकर उत्तम और अच्छी किस्म की खाद बनती है। इस खाद में फॉस्फेट, एसिड, पोटाश और चूने की पर्याप्त मात्रा होने से यह फसल के लिए बहुत उपयोगी होती है।

इस तरह मूंगफली का हरेक हिस्सा खास उपयोगी है। खासतौर से मूंगफली प्रोटीनयुक्त तथा पौष्टिक होने की वजह से उसका नियतिम सेवन किया जाना चाहिए। यह सर्वसुलभ व पौष्टिक आहार है।

पढ़ो और हँसो

मकान मालिक : (बिल्डर से) नीचे वाले मकान का हिस्सा कितने में बनेगा?

बिल्डर : दस लाख में।

मकान मालिक : और ऊपर वाली मंजिल?

बिल्डर : पांच लाख में।

मकान मालिक : तो ऐसा करो, तुम पहले ऊपर वाली मंजिल बना दो।

होटल मैनेजर : जनाब! मैंने आपसे कह दिया कि हमारे यहाँ कोई कमरा खाली नहीं है। आप जा सकते हैं।

परेशान यात्री : यदि प्रधानमंत्री जी आ जाएं तो तुम उन्हें कमरा दे दोगे?

मैनेजर : हाँ, क्यों नहीं।

यात्री : तो फिर मुझे उनका कमरा दे दो वह नहीं आ रहे हैं।

मेहमान : (छोटे बच्चे से) बेटा, तुम्हारा जन्म किस दिन हुआ था?

बच्चा : शुक्रवार को और आपका?

मेहमान : संडे को।

बच्चा : झूठ संडे को तो छुट्टी होती है।

मम्मी : बबलू, तुम आज स्कूल से जल्दी क्यों आ गये?

बबलू : मम्मी, मेरा गबरू के साथ झगड़ा हो गया और 'सर' ने मुझे क्लास से बाहर निकाल दिया।

मम्मी : लेकिन तूने गबरू के साथ झगड़ा क्यों किया?

बबलू : मुझे आज जल्दी घर आना था इसलिए।

– आजाद कुमार (बड़ौदा)

विद्यार्थी : सर, हम कुछ भी न करें तो क्या आप हमें दंडित करोगे?

सर : नहीं।

विद्यार्थी : तब तो ठीक है, आज मैंने होमवर्क नहीं किया।

शिक्षक : विवेक तुम आज दस मिनट लेट आए हो।

विवेक : नहीं सर, पाँच मिनट से तो मैं बाहर खड़ा बहाना ढूंढ रहा था कि मैं क्या बताऊँ?

– प्रियंका चोटिया (हनुमानगढ़)

राजू ड्राइंगरूम में बैठकर 'ड्राइंग' बना रहा था। उसकी मम्मी ने गुस्से में आकर राजू से कहा– ये जगह ड्राइंग (चित्र) बनाने की नहीं है। राजू बोला– मम्मी जी ये ड्राइंग रूम है इसलिए तो मैं यहाँ ड्राइंग कर रहा हूँ।

अध्यापक : (छात्र से) 'परिभाषा' किसे कहते हैं?

छात्र : सर परियों की भाषा को परिभाषा कहते हैं। **अविनाश धाक (बड़ौदा)**

अध्यापक : (चमनलाल से) क्या तुम बता सकते हो कि दर्द-नाक का क्या मतलब होता है?

चमनलाल : सर, नाक का दर्द। चमनलाल ने फौरन जवाब दिया।

एक पड़ोसी : (दूसरे पड़ोसी से) तीन बुलाओ और तेरह आ जाएं तो क्या किया जाए?

दूसरा पड़ोसी : फौरन 'नौ दो ग्यारह' हो जाने में ही भलाई है।

– सुशान्त सागर (मोतीहारी)

माँ : राजू, तुमने छोटू को क्यों पीटा?

राजू : वह मेरी बात का जवाब नहीं दे रहा था।

माँ : उसे अभी बोलना नहीं आता।

राजू: तो उसे बोलना चाहिए था कि उसे बोलना नहीं आता।

ग्राहक : यह चाय इतनी ठंडी क्यों है?

वेटर : साहब! यह दार्जिलिंग की चाय है।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

एक बार एक हाथी जंगल से गुजर रहा था तो सब चूहे अपने-अपने बिलों में घुस गये परन्तु एक चूहा अपने पैर बाहर निकाले हुए था।

दूसरे चूहे ने उससे पूछा– तुमने अपना पैर बाहर क्यों निकाल रखा है?

पहला चूहा बोला – जब हाथी मेरे पास आयेगा तो मैं हाथी को अपने पैर से अड़ंगी मारकर गिरा दूँगा।

– अजित कुमार (अलवर)

कहानी : कल्पनाथ सिंह

दुश्मनी सांप और नेवले की

पलाशवन छोटे-छोटे पेड़-पौधों का एक बड़ा घना जंगल था। उसमें कोई हिंसक जानवर नहीं रहता था। ढेर सारे छोटे-मोटे जानवर आपस में बुहत ही मिल-जुलकर रहते थे। एक-दूसरे के सुख-दुख का ध्यान भी रखते थे और आपस में एक-दूसरे की मदद भी खूब करते थे।

कुछ जानवरों में तो आपस में बड़ी घनी दोस्ती थी। वे एक-दूसरे के लिए जान तक देने के लिए तैयार रहते थे।

खरगू नेवला और कालू चूहे का बिल आस-पास थे। वे एक-दूसरे का बहुत ध्यान भी रखते थे। मदद भी करते थे। इसलिए उन दोनों में गहरी दोस्ती हो गयी थी। पूरे जंगल में उनकी दोस्ती की चर्चा होती रहती थी।

पलाशवन के जानवरों में इतना संगठन था कि वे सब किसी भी बाहरी जानवर के आने पर मिल-जुलकर उसकी मदद तो करते थे लेकिन किसी बाहरी जानवर को वे जंगल में अधिक दिन टिकने नहीं देते थे।

एक बार न जाने कहाँ से भूरा नाम का एक सांप जंगल में आ गया। उस समय खरगू नेवला और कालू चूहा चारा-दाना की तलाश में कहीं जा रहे थे। भूरा सांप को देखकर दोनों रूक गये। जंगल के नियम के अनुसार दोनों ने भूरा सांप का स्वागत-सत्कार किया।

पलाशवन की शान्ति व सुख-सुविधा देखकर भूरा सांप ने उसी जंगल में रहने का विचार बना लिया परन्तु दूसरे ही दिन तमाम जानवरों ने भूरा सांप को जंगल से भगाने की ठान ली। लेकिन भूरा सांप एक ही दिन में खरगू नेवला और कालू चूहा से इतना घुलमिल गया कि उन दोनों को अपने पक्ष में कर लिया। इसलिए खरगू नेवला और कालू चूहा ने भूरा सांप को कुछ दिन तक पलाशवन में रहने देने के लिए सभी जानवरों को समझा-बुझाकर मना लिया।

एक दिन खरगू नेवला भूरा सांप से बोला– भूरा भाई! इस जंगल में किसी बाहरी जानवर को टिकने नहीं दिया जाता है। आपके लिए हम दोनों को बड़ी सिफारिश करनी पड़ी है तब सभी जानवर माने हैं। इसलिए देखना भाई बदनामी न होने पाये। शान्ति से रहना। किसी से भी झगड़ा नहीं करना।

–अरे भाई! आप क्या बात करते हैं? मैं तो यहाँ की शान्ति, सभी जानवरों का आपसी मेल-मिलाप देखकर मुग्ध हो गया हूँ। मैं खुद बहुत शान्ति पसन्द जानवर हूँ। मेरी तरफ से जितनी मदद हो सकेगी मैं सबकी मदद करूंगा कोई दो बात बुरा-भला भी कहेगा तो भी गरदन नीची करके सब सुन सह लूंगा।

तभी कालू चूहा बोल पड़ा– भूरा भाई! यहाँ जंगल में तो एक-दूसरे के बाल-बच्चों की भी जरूरत पड़ने पर देखभाल कर लिया करते हैं।

–यह तो भाई करना ही चाहिए तभी तो मेल-मिलाप और दोस्ती पक्की रहती है।– भूरा सांप बोला।

खरगू नेवला बोला– भूरा भाई इस जंगल में कोई भी जानवर बीमार भी पड़ जाता है तो सभी मिलकर उसकी दवा और इलाज करते हैं। उसके परिवार तथा उसके खाने-पीने का भी सभी मिलकर जुगाड़ करते हैं।

खरगू नेवला बोला तो भूरा सांप और भी मग्न होकर बोल पड़ा– खरगू भाई मैं तो अकेला ही हूँ। कोई मेरे बाल-बच्चे भी नहीं हैं। देखना मैं कितने लोगों की मदद करूंगा।

–तो और भी खुशी होगी भाई! हमारा भी नाम होगा कि हमने कितने अच्छे मेहमान को इस जंगल में रहने के लिए सहारा दिया।– कालू चूहा बोला।

इस तरह भूरा सांप भी खरगू नेवला और कालू चूहा के बिल से थोड़ी दूर एक कन्दरा में रहने लगा।

खरगू नेवले के दो बच्चे थे और कालू चूहा के चार बच्चे थे। सभी बच्चे एक साथ मिल-जुलकर खेलते थे।

कुछ ही दिन बाद भूरा सांप का मन डोलने लगा। वह बच्चों को खेलता देखता तो उसके मुँह में पानी भर आता। धीरे-धीरे वह अवसर की तलाश करने लगा।

एक दिन कालू चूहा की पत्नी 'गोली चुहिया' एकाएक बीमार पड़ गई। कालू उसको लेकर डॉक्टर के पास जाने लगा तो वह खरगू नेवले से बोला– खरगू भाई, मैं गोली को डॉक्टर के पास दिखाने जा रहा हूँ। जरा बच्चों का ध्यान रखना।

–अरे भाई! तुम बेफिक्र होकर जाओ। जरा भी चिन्ता नहीं करना। कहो तो मैं भी चलूं।

–चलना चाहो तो चलो लेकिन बच्चों की देखभाल कौन करेगा?

–अरे भाई! भूरा सांप तो पड़ोस में ही रहता है। उसी से कह देते हैं।

–बात तो आप ठीक कहते हैं। तो आइये आप भी साथ रहेंगे तो काफी मदद मिलेगी।

यह कहकर दोनों भूरा सांप की देखभाल में अपने बच्चों को छोड़कर गोली चुहिया को लेकर डॉक्टर के पास चले गये।

थोड़ी देर में ही खरगू नेवला और कालू चूहे के बच्चे बिल से बाहर आकर खेलने लगे। भूरा सांप तो इसी अवसर की तलाश में था ही।

इतने में भूरा सांप भी आ गया। वह बच्चों के बीच खेलने का ढोंग करने लगा। कुछ ही देर में भूरा सांप ने खरगू नेवला के दोनों बच्चों को बहकाकर उनके बिल में भेज दिया।

खरगू नेवला के दोनों बच्चों के बिल में जाते ही इधर भूरा सांप कालू के बच्चों पर टूट पड़ा। देखते ही देखते उसने मिनटों में चारों को चट कर गया।

उधर खरगू नेवला के दोनों बच्चे अपने बिल से गरदन निकाले यह सब तमाशा देखकर अपने बिल से निकलकर डर के मारे पास की झाड़ी में जाकर छुप गये।

शाम को जब खरगू नेवला, कालू चूहा और गोली चुहिया डॉक्टर के यहाँ से वापस आये तो खरगू के बच्चे झाड़ी से निकलकर बाहर आये और बिलख-बिलखकर भूरा सांप की पूरी दास्तान बता दी।

अपने बच्चों को भूरा सांप द्वारा खा जाने की बात सुनते ही गोली चुहिया जो पहले से ही बीमार थी कुछ ही देर में मर गई।

खरगू नेवला तो एकदम स्तब्ध रह गया। उधर बीवी-बच्चों के मरने से कालू चूहे का भी बुरा हाल था। क्रोध में आग-बबूला खरगू नेवला तुरन्त भूरा सांप को तलाश करने उसकी कन्दरा पर पहुँचा लेकिन भूरा सांप तो कालू चूहे के बच्चों को चटकर जंगल छोड़कर तुरन्त कहीं गायब हो गया था।

खरगू नेवला ने कालू चूहा को धीरज बंधाया और बोला– कालू भाई! बहुत बड़ा धोखा हो गया। हम लोग तो जंगल के जानवरों को मुँह दिखाने लायक भी नहीं रहे। कोई बात नहीं अब तो धोखा हो ही गया लेकिन मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि भूरा सांप को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।

और तभी से नेवलों की इतनी दुश्मनी सांप से हो गई कि वह दुश्मनी आज तक चली आ रही है। आज भी नेवले जहाँ सांप को देखते हैं उन पर टूट पड़ते हैं और काटकर टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं। लगता है कि नेवलों और सांपों की दुश्मनी कभी खत्म ही नहीं होगी।

पौराणिक कथा : चन्द्रभान

समझदारी

एक गधा मैदान में घास चर रहा था। जब उसने सिर उठाकर देखा तो बाघ उसकी ओर आ रहा था। अपने और बाघ के बीच की दूरी को देखकर गधे की समझ में आ गया कि अब प्राण बचाकर भागना तो असम्भव है क्योंकि बाघ एक छलांग लगाकर मेरा काम तमाम कर देगा। गधे ने बुद्धि से काम लेने की सोची। वह अपने पिछले पैर से लंगड़ाकर चलने लगा।

बाघ ने गधे के पास जाकर उसके लंगड़ाकर चलने का कारण पूछा।

गधे ने बाघ से कहा– भाई दौड़ते समय पैर में एक लम्बा तथा मोटा कांटा चुभ गया। इस कांटे से मेरे पैर में दर्द हो रहा है।

बाघ बोला– फिर क्या करना चाहिए?

गधा बोला– यदि तुम मुझे खाना चाहते हो तो पहले मेरा यह कांटा निकाल दो। नहीं तो यह कांटा तुम्हारे गले में अटक जायेगा और तुम्हें अपने प्राण गंवाने पड़ेंगे।

बाघ ने गधे की बात मान ली। तत्पश्चात् बाघ ने गधे के पैर को बड़े आराम से उठाया और चुभे हुए कांटे को ढूंढ़ना शुरू किया। गधे ने यही अवसर सही समझा और उसने कसकर बाघ को दुलत्ती जमाई और हवा की गति से भाग निकला। गधे की जोरदार दुलत्ती और एकाएक चोट से बाघ का मुँह टेढ़ा हो गया। उसके सामने के दांत टूट गये और जबड़े से खून आने लगा।

अन्त में वह मन मसोसकर भूखा ही लौट गया।

शिक्षा : यदि धैर्य और बुद्धि से काम लिया जाए तो बलवान शत्रु को भी पराजित किया जा सकता है।

पहेलियां

1. उसका घर फौलादी चादर,
   जल के भीतर जल के बाहर।
   संग हर जगह जाता है,
   कभी छूट न पाता है।।

2. लाल लाल आँखें,
   लम्बे लम्बे कान।
   रूई का फुहासा,
   बोलो क्या है उसका नाम?

3. रात गली में खड़ा खड़ा,
   डंडा लेकर बड़ा-बड़ा।
   रहो जागते होशियार,
   कहता है वो बार-बार।।

4. घोड़ा दौड़ा पटरी पर,
   फिर उड़ जाएगा ऊपर।
   बादल के प्यारे घर में,
   दूर हवा के अन्दर में।।

5. हरा हूँ पर पत्ता नहीं,
   नकलची हूँ पर बन्दर नहीं।
   बूझो तो मेरा नाम सही?

6. वह कौन सी चीज है?
   जिसका रंग काला है।
   वह उजाले में तो नजर आती है,
   परन्तु अंधेरे में दिखाई नहीं पड़ती।

उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें

कभी न भूलो

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल (जौनपुर)

- ✯ बच्चों का भविष्य उनकी शिक्षा पर आधारित है।
- ✯ बड़ों व विद्वानों का आदर करने से शुभाशीष मिलती है जो प्रगतिकारक होती है।
- ✯ माँ की ममता एवं राष्ट्र का सम्मान करें।
- ✯ बीता हुआ समय कभी भी वापस नहीं आता है इसलिए हर समय का सही उपयोग करें।
- ✯ इन्सान अपनी जाति से नहीं बल्कि अपने कर्मों से महान माना जाता है।
- ✯ विनम्रता न हो तो विद्या का क्या अर्थ है।
- ✯ उपयोग न हो तो धन व्यर्थ है।
- ✯ साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है।
- ✯ होश न हो तो जोश व्यर्थ है।
- ✯ जिस स्थान में सम्मान न हो, आदमी की आय का कोई साधन न हो, कोई भाई-बन्धु न हो, मित्र न हो जहाँ विद्या प्राप्त न हो सके उस स्थान पर एक दिन भी नहीं रहना चाहिए।
- ✯ जिस व्यक्ति की अपनी बुद्धि नहीं होती, शास्त्र भी उसको लाभ नहीं पहुँचा सकते। जैसे आँख से हीन (अंधे) व्यक्ति को ऐनक से कोई लाभ नहीं होता।
- ✯ आचरणरहित विचार कितने अच्छे क्यों न हों, उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए।
- ✯ जैसे शरीर के लिए व्यायाम जरूरी है, वैसे ही मन के लिए स्वाध्याय जरूरी है।
- ✯ प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं, आवश्यकताएं कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिठाएं।
- ✯ न तो समय को नष्ट कीजिए और न दौलत को, बल्कि दोनों का सर्वोत्तम उपयोग कीजिये।
- ✯ न तो संसार में तुम्हारा कोई मित्र है, न ही कोई शत्रु। तुम्हारा अपना व्यवहार ही शत्रु या मित्र बनाने का उत्तरदायी है।
- ✯ एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है इसलिए उसका हर हालात में सम्मान करना चाहिए।
- ✯ जो शान्त है और अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक है, वही सज्जन पुरुष है।
- ✯ जीतने के लिए खेलो, हारने के लिए नहीं।

– लोकोक्ति

- ✯ सही काम करने के बाद सबसे जरूरी यह है कि लोग जाने कि आप सही कर रहे हैं।

– रॉकफेलर

- ✯ फुटबॉल की तरह जिन्दगी में भी जीत के लिए अपने लक्ष्य का पता होना जरूरी है।

– ग्लास्को

- ✯ जब हम अपनी भूल पर लज्जित होते हैं तो यथार्थ बात अपने आप ही मुँह में से निकल पड़ती है। **– मुंशी प्रेमचंद**

पहेलियों के उत्तर :

1. कछुआ, 2. खरगोश, 3. चौकीदार, 4. हवाई जहाज, 5. तोता, 6. परछाई।

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode on 23rd of every month
News Divine
www.nirankari.org
Catch the latest episode on 10th of every month
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode on 20th of every month
Voice Divine
radio.nirankari.org
Catch the latest episode on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. G-3/DL (N) 136/2021-2023
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

पाठकों से निवेदन

हिन्दी, पंजाबी तथा अंग्रेजी भाषा की निरंकारी पत्र-पत्रिकाओं: सन्त निरंकारी, एक नज़र तथा हँसती दुनिया के पाठकों से निवेदन है कि पत्र-पत्रिकाओं के रिकॉर्ड को अपडेट किया जा रहा है। अतः आप अपना मोबाइल नं. और ई-मेल पत्रिका विभाग को

ई-मेल : sulekh.sathi@nirankari.org और patrika@nirankari.org तथा

WhatsApp Mobile No. 9266629841 पर अतिशीघ्र भेजें ताकि आपका रिकॉर्ड update किया जा सके।

लेखकों के लिए

☞ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली 'सन्त निरंकारी' विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें अनुभवी लेखकों की रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। अध्यात्म, साहित्य एवं समाज के रचनात्मक समन्वय का प्रयास भी इस पत्रिका द्वारा किया जाता है।

☞ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र 'एक नज़र' की विषय-वस्तु मुख्यतः दार्शनिक लेख, गहरे पानी पैठ, बाल जगत, ज्ञान-विज्ञान, प्रेरक प्रसंग, प्रेरक विभूति आदि हैं। इसके स्तर में सुधार तथा इसे और आकर्षक बनाने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

☞ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक 'हँसती दुनिया' में रोचक कहानियाँ, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ सामग्री जैसे लेख, गीत, कहानी, कविताएं आदि केवल ई-मेल: sulekh.sathi@nirankari.org और editorial@nirankari.org पर ही भेजें ताकि आपकी रचनाओं को समयानुसार प्रकाशित किया जा सके।

—Sulekh 'Sathi'
Managing Editor, Magazine Department

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)